मुगल काल

बाबर

- बाबर शेख उमर मिर्जा का पुत्र था, जिसका जन्म फरगना में हुआ और 1494 में वहाँ का शासक बन गया। अपने चाचा से समरकंद प्राप्त करने के प्रयास में असफल रहा। 1504 में काबुल पर विजय। 1508 में महामबेगम ने हुमायूँ को जन्म दिया।

★ **बाबर का भारत पर आक्रमण के कारण :-**

1) सफाविद ने उजबेकों को हरा दिया एवं ऑटोमन ने सफाविदों को।
2) पंजाब पर तिमूरी अधिकार के नाते अपना वैधानिक अधिकार मानना।
3) काबुल के संसाधनों का कम होना आदि।

★ **बाबर का भारत अभियान :-**

- प्रथम अभियान – 1518–19 में भीरा (बाजौर) पर आक्रमण। इसी युद्ध में पहली बार तोपखाना का प्रयोग। –उत्तर भारत में
- दूसरा अभियान – 1520–21
- तीसरा अभियान – 1524
- चौथा अभियान – 1525 – इस आक्रमण के पूर्व बाबर को दौलत खाँ लोदी का निमंत्रण प्राप्त हुआ था कि वह पंजाब पर आक्रमण करे। दौलत खाँ लोदी, इब्राहिम लोदी का पंजाब क्षेत्र का गवर्नर था और इसके पुत्र दिलावर खाँ का इब्राहिम लोदी ने अपमान किया था। कहा जाता है कि राणा सांगा भी इब्राहिम लोदी के मद्देनजर बाबर को आमंत्रित किया था। उसकी समझ थी कि बाबर के आक्रमण से इब्राहिम लोदी कमजोर हो जायेगा, किंतु सांगा का अंदाजा गलत निकला। पंजाब पर बाबर के नियंत्रण के बाद 1526 में इब्राहिम लोदी एवं बाबर के बीच **पानीपत की प्रथम लड़ाई** हुयी और बाबर विजयी रहा। इस विजय के उपलक्ष्य में बाबर ने काबुल के प्रत्येक निवासी को एक-एक चांदी का सिक्का दान किया। उसकी इस उदारता के कारण उसे कलंदर कहा गया।

- बाबर ने पानीपत की विजय के पश्चात् कहा था – 'काबुल की गरीबी अब हमारे लिए फिर नहीं' (बाबरनामा)।

★ **बाबर के विजय के कारण :-** 1) तुलुगमा या रूमी पद्धति 2) तोपखाना – दो ऑटोमन तोपची – (उस्ताद अली व मुस्तफा) 3) तीरंदाजी – बाबर अपनी विजय का श्रेय इसी को देता है।*

उस्ताद अली व मुस्तफा

नोट :- कालान्तर में उस्ताद अली बहादुर शाह (गुजरात) के यहाँ चला गया।

इस तरह बाबरी सेना का दिल्ली एवं आगरा पर आधिपत्य हो गया एवं ग्वालियर के राजा विक्रमजीत से कोहिनूर हीरा हुमायूँ को मिला, जो उसने बाबर को दिया। फिर बाबर इसे हुमायूँ को लौटा दिया।

1527 खानवा
- 1527 को **खानवा की लड़ाई**, जिसमें 18 युद्धों का विजेता राणा सांगा की सहायता कई राजपूत राजाओं जैसे मारवाड़, चन्देरी आदि कर रहे थे, वहीं महमूद लोदी व हसन खाँ मेवाती भी कर रहे थे। दूसरी तरफ बाबर जेहाद के नारे तथा मुसलमानों पर लगने वाले तमगा नामक कर की समाप्ति की घोषणा के साथ मैदान में उतरा और सफल रहा। (तमगा – खानवा) (महमूद लोदी व हसन खाँ मेवाती)

1528 चंदेरी
- 1528 में **चन्देरी की लड़ाई** में बाबर ने मेदनी राय को पराजित किया। राजपूतों के सिरों की मीनार बनवाई तथा राजपूत स्त्रियों ने जौहर किया।*

Scanned by CamScanner

- 1529 में घग्घर की लड़ाई (जल व थल दोनों पर लड़ा गया) में बाबर ने अफगानों को पराजित किया, किंतु काबुल के विद्रोह के मद्देनजर बाबर को संधि करना पड़ा। 1530 में मार्ग में ही लाहौर में मृत्यु। मृत्यु के बारे में हुमायूँ की बीमारी को ठीक करने के बदले अपनी जान दे दी.....(हवाला गुलबदन बेगम) जिसकी सलाह नामी फकीर अबू बका से।

काबुल के आरामबाग में दफन। पहले इनको दफन रामबाग आगरा में कराया गया था।

- बाबर द्वारा कुषाणों के पश्चात् पहली बार काबुल एवं कंधार को भारतीय साम्राज्य में शामिल किया जा सका। इससे बाह्य आक्रमण का खतरा घटा एवं व्यापार में वृद्धि की संभावना बढ़ी व एक तरफ जहाँ मुगल साम्राज्य की नींव पड़ी वहीं फिरोजशाह तुगलक के बाद राजस्व की घटी प्रतिष्ठा का पुनर्स्थापन हुआ, केन्द्रीयकरण को बल मिला।
- बाबर ने मीर खलीफा (प्रधानमंत्री के समान पद) नामक पद का सृजन किया।
- एक काव्य संग्रह दीवान का संकलन करवाया तथा मुबइयान नामक पद्य शैली का विकास किया।
- उसने रिसाल-ए-उसज की रचना की, जिसे खत-ए-बाबरी भी कहा जाता है।

हुमायूँ (1530-56)

- लेनपूल कहता है कि भाग्यशाली नामक ऐसा अभागा शासक कोई दूसरा पैदा नहीं हुआ। वह जीवन भर लुढ़कता रहा एवं लुढ़कता हुआ ही मर गया। बाबर हुमायूँ को यह सलाह दिया कि अपने भाईयों की गलतियों को माफ कर उनके साथ अच्छा व्यवहार करें, यद्यपि बाबर ने भाइयों के बीच राज्य को विभाजित करने का सुझाव नहीं दिया था। पुनः बाबर ने ही हुमायूँ को बताया था कि हिन्दुस्तान की अधिसंख्यक आबादी हिन्दू है। अतः उनका (शासक) दृष्टिकोण व्यवहारिक होना चाहिए।
- **प्रांतीय व्यवस्था** - काबुल, कंधार, पंजाब - कामरान
  - संभल - अस्करी
  - अलवर/ मेवात - हिन्दाल

  (तीनों हुमायूँ के अपने भाई)
  - बदख्शाँ - मिर्जा सुलेमान (हुमायूँ का चचेरा भाई)

★ **हुमायूँ का अभियान :-**

- कालिंजर - 1530, शासक प्रताप रूद्रदेव।
- दोराहा की लड़ाई में (1532) पूर्वी अफगानों को पराजित किया, जिसमें अफगानों का नेतृत्व महमूद लोदी ने किया एवं 1533 में चुनार के किला पर अधिकार लेकिन शेरशाह द्वारा अधीनता स्वीकार कर लेने और अपने पुत्र कुतुब खाँ के साथ एक अफगान टुकड़ी मुगलों की सेवा में भेज दिए जाने पर उसे ही किला सौंप दिया। इसके बाद दिल्ली में अपनी दूसरी राजधानी दीनपनाह का निर्माण कराया।
- 1533-36 में गुजरात व मालवा विजय।
- 1538 ई. में चुनार पर दूसरा अभियान और इस बार गौंड पर अधिकार, जहाँ उपभोग समृद्धि के मद्देनजर हुमायूँ ने इसे जन्नतावाद करार दिया।

इस बीच हिन्दाल द्वारा सत्ता पर अधिकार की चेष्टा जिसे कामरान ने रोका और जब हुमायूँ वापस होने लगा तो शेरशाह ने उसका संबंध दिल्ली और आगरा से काट दिया और चौसा (बक्सर) की लड़ाई (1539) में हुमायूँ पराजित हुआ और एक भिश्ती के सहयोग से बच पाया। इस भिश्ती (निजाम) को एक दिन के लिए शहंशाह बनाया।

Scanned by CamScanner

- 1540 में कन्नौज (बेलग्राम) की लड़ाई में एक बार फिर हुमायूँ को शेरशाह ने पराजित किया।
- 1541 में हमीदाबानु बेगम से विवाह व अमरकोट के शासक राणा वीरशाल के घर अकबर का जन्म (1542 में)।
- 1545 में ईरान के शासक शाह तहमाश्प के पास पहुँचा। हुमायूँ क्यों पराजित हुआ –
  - भाईयों के बीच विवाद ∘ विलासी जीवन वृत्ति ∘ दूर दृष्टि की कमी एवं भाग्य के विपरित होना

  इसके सामानांतर शेरशाह एक योग्य एवं अनुभवी प्रतिद्वंदी था।
- शाह तहमाश्प के सहयोग से कंधार को 1551 में जीता और अस्करी को मक्का भेज दिया। इस बीच हिन्दाल हुमायूँ के पक्ष में आ गया और कामरान से लड़ता हुआ मारा गया एवं 1553 में हुमायूँ का काबुल पर आधिपत्य हुआ और कामरान को अंधा बनाकर मक्का भेज दिया।
- 1555 में पंजाब के गवर्नर सिकंदर सूर से लाहौर **मच्छिवारा** की लड़ाई में छीन लिया और इसके बाद फिर दिल्ली और आगरा पर पुनः अधिकार। लेकिन 1556 में **शेरमंडल** (पुस्तकालय) से गिरकर मर गया।
- हुमायूँ ज्योतिष में अधिक विश्वास करता था। इसलिए वह सप्ताह में सातो दिन सात रंग के कपड़े पहनता था। साथ ही वह अफीम का बहुत शौकीन था।
- अबुल फजल ने हुमायूँ को **इंसान-ए-कामिल** कहा है।

शेरशाह (1540-45)

- जन्म – नारनौल में। इसका वंशज बहलोल लोदी के समय रोह से भारत आया था। यह हसन का पुत्र था, जिसका नाम फरीद था। आरंभ में ही सासाराम परगना का प्रबंधन करते हुए वह भू-राजस्व प्रबंधन की योग्यता प्राप्त किया था।
- बिहार के बहार खाँ लोहानी की सेवा में जहाँ वह नाबालिग युवराज जमाल खाँ का शिक्षक (वकील/अत्तालिक) नियुक्त हुआ।

  एक शेर की हत्या के लिए इसे बहार खाँ लोहानी ने इसे **शेर खाँ** की उपाधि दी। बहार खाँ की मृत्यु के बाद वह लाड मल्लिका से विवाह कर बिहार का वास्तविक शासक बन गया, चुनार के किला पर अधिकार कर लिया।

नोट :– 1527-28 में बाबर के अधीन रहा।

- 1529 में शेर खाँ महमूद लोदी की ओर से घाघरा युद्ध में भाग लिया था। इसी वर्ष बंगाल के शासक नुसरत शाह को पराजित कर **हजरते-आला** की उपाधि धारण की।
- 1537 में बिहार में लोहानी शासक एवं बंगाल के गयासुद्दीन महमूद को क्यूल नदी के किनारे सूरजगढ़ (सूर्यगढ़ा) की लड़ाई में पराजित किया। फिर चौसा एवं कन्नौज विजय।
- 1540 में पादशाह बना और आगरा का शासक बन गया।
- उत्तरी-पश्चिमी सीमा की सुरक्षा के लिए **रोहतासगढ़** किला बनवाया और **हैबत खाँ** तथा **खवास खाँ** के नेतृत्व में एक शक्तिशाली सेना को नियुक्त किया।
- शेरशाह का अभियान – खोखरों के विरूद्ध अभियान (1541)।
- 1541 में ही बंगाल में खिज्र खाँ के विद्रोह का दमन कर पूरे प्रांत को 16 सरकारों में विभक्त कर दिया और उनके उपर एक **अमीन-ए-बंगाल** के माध्यम से प्रशासनिक नियंत्रण स्थापित किया।
- 1542 – ग्वालियर विजय, 1543 – मालवा विजय।

Scanned by CamScanner

- 1544 - जोधपुर के शासक मालदेव को सेमल की लड़ाई में पराजित किया। इस युद्ध में राजपूत सरदार जयता और कुप्पा ने अत्यंत वीरता दिखाई।
- शेरशाह मारवाड़ युद्ध में राजपूतों की वीरता से इतना प्रभावित हुआ कि उसने कहा - "मै मुट्ठी भर बाजरे के लिए लगभग हिन्दुस्तान का साम्राज्य खो चुका था।"

नोट :- 1543 ई. में रायसीन के पूरनमल के विरुद्ध अभियान, जिसमें शेरशाह ने पूरनमल को किले से सुरक्षित निकालने का वचन देकर उनपर हमला कर दिया, जिसमें सेना तो मारी गई और महिलाओं ने जौहर कर लिया। इस घटना को शेरशाह के जीवन पर एक धब्बा माना जाता है।

- 1545 में कालिंजर अभियान (अंतिम अभियान) - यही पर उक्का नामक अग्नेयास्त्र चलाते समय गोला फट जाने के कारण शेरशाह घायल हुआ मृत्यु।

★ **उत्तराधिकारी** :-

- जलाल खाँ (इस्लाम शाह सूर) - 1545-54 - कोड ऑफ लॉ बनाया।
- फिरोजशाह (अल्पव्यस्क)। इसकी हत्या के बाद मुबारिज शाह (आदिल शाह) शासक बना व हेमू को वजीर बनाया और इसे विक्रमाजीत की उपाधि प्रदान की।

★ **प्रशासन** :-

- **केन्द्रीय प्रशासन** -

◦ वजीर - वित्त विभाग	◦ आरिज - सैन्य विभाग
◦ इशा - डाक विभाग	◦ बरीद - गुप्तचर
◦ कजा - न्याय	◦ रिसालत - धर्म / विदेश विभाग

- प्रशासन का पूरा केन्द्रीयकरण - अलाउद्दीन, शेरशाह, अकबर
- **प्रांतीय प्रशासन** - शेरशाह पर लिखने वाले आधुनिक इतिहासकार **कानूनगो** हैं, जो मानते हैं कि उसके काल में प्रांतों में साम्राज्य का विभाजन नहीं हुआ था। अबुल फजल के अनुसार उसका साम्राज्य 63 सरकारों में विभक्त था।

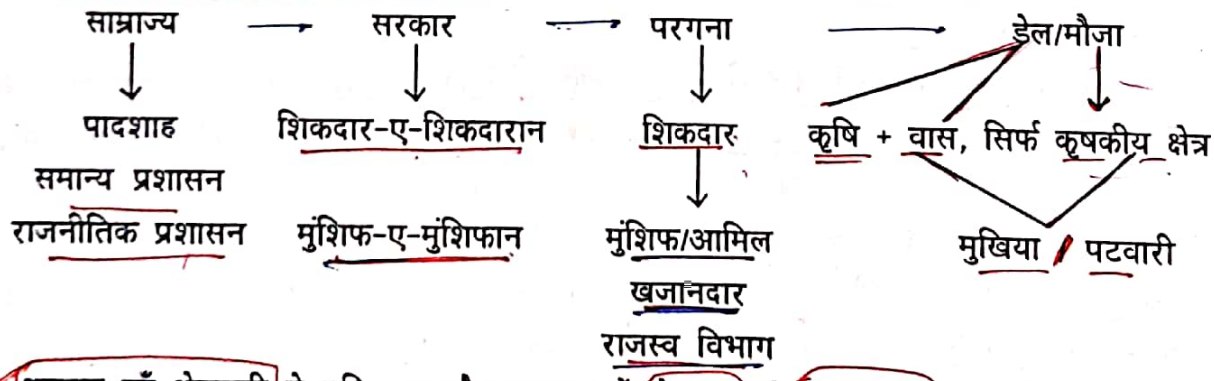

- अब्बास खाँ शेरवानी ने बुद्धिमत्ता और अनुभव में शेरशाह को दूसरा हैदर कहा है।
- जायसी ने पद्मावत की रचना शेरशाह के काल में ही की। यद्यपि यह शेरशाह के संरक्षण में नहीं था।

★ **शेरशाह का भू-राजस्व प्रशासन** :-

- शेरशाह ने भूमि को अच्छी, मध्यम एवं बुरी भूमि में वर्गीकृत किया। इसकी पैमाइश को बीघा में गज-ए-सिकंदरी नामक मापक इकाई से जरीब के माध्यम से पूरा किया।
- जरीब - रस्सी के माध्यम से।
- कुल उत्पादन का 1/3 भू-राजस्व के रूप में तय किया गया जबकि मुल्तान में यह 1/4 था। कृषकों को पट्टा के रूप में जमीन दी जाती थी और उनसे कबूलियत किया जाता था।

Scanned by CamScanner

- भू-राजस्व के 1/3 के अलावा जरीबाना (2.5 प्रतिशत) और मुहसिलाना (5 प्रतिशत) लिया जाता था। वसूली के लिए जमींदारों को मार्ग से हटाकर सरकार प्रत्यक्ष (अपने अधिकारियों के माध्यम से) वसूली (रैय्यतवाड़ी के समान) की नीति अपनाई।
- शेरशाह कृषकों से नकद एवं अन्न दोनों रूप में भू-राजस्व वसूल करता था लेकिन नकद को प्राथमिकता थी। फसल की दर स्थानीय कीमत के आधार पर निर्धारित।
- शेरशाह द्वारा प्रचलित रैय्यतवाड़ी लगान व्यवस्था मुल्तान को छोड़कर राज्य के सभी भागों में लागू थी, जबकि मुल्तान में चली आ रही बँटाई (हिस्सेदारी) प्रथा को ही चलने दिया।
- भूमि पैमाइश में अहमद खाँ की सहायता ली।
- कल्याणकारी कार्य - शेरशाह देश की समृद्धि के लिए सड़क निर्माण व उसकी सुरक्षा को आवश्यक मानता था। इनके माध्यम से सैनिक / प्रशासनिक / वाणिज्यिक कार्य बेहतर ढंग से संचालित हो सकता है।
- सड़क निर्माण -

◦ राजकीय मार्ग (ग्रैंड-ट्रैंक रोड़) का निर्माण	
◦ सोनार गाँव से पेशावर	◦ आगरा से चित्तौड़
◦ लाहौर से मुल्तान	◦ आगरा से बुरहानपुर

- सड़कों की सुरक्षा के लिए दो-दो कोस (चार मील) पर सराय का निर्माण, जिसे शेरशाह के साम्राज्य की धमनियाँ कहा गया है, का निर्माण कराया।
- सराय का इस्तेमाल - 1) किलाबंद पंथशाला 2) बाजार 3) डाक चौकी।
- इसका प्रबंधन एवं सुरक्षा शहना के माध्यम से। इन सरायों में हिन्दू व मुलसमानों के लिए अलग-अलग व्यवस्था। शेरशाह ने 1700 सरायों को बनवाया। इस्लाम शाह ने हर दो सरायों के मध्य एक सराय बनवाया।
- वाणिज्य व्यापार को प्रोत्साहित करने के लिए - सोने की अशर्फी, तांबा का दाम, चांदी का रूपया। मापतौल का मानकीकरण। चुंगी में सुधार किया गया। अनेक स्थानों पर चुंगी पोस्ट को हटाकर सिर्फ दो स्थलों पर चुंगी वसूली का केन्द्र बनाया -
  1) सिकरीगली तथा 2) सिंधु नदी का क्षेत्र।
- कानून एवं व्यवस्था में चोरी व राहजनी से निबटने के लिए मुकदमों एवं जमींदारों के ऊपर व्यक्तिगत जिम्मेदारी सौंपी (क्षतिपूर्ति की नीति)।

नोट :- इस तरह की क्षतिपूर्ति की नीति कृषि के संबंध में थी। यदि सेना फसल को कुचल दे तो क्षतिपूर्ति सरकार से।

- शेरशाह की प्रशासन व्यवस्था केन्द्रीयकृत थी, जो तुर्की पद्धति पर टिका था, किंतु अमीर वर्ग में अफगानों को स्पष्ट वरीयता थी। शेरशाह के काल में जजिया को नगर कर के रूप में अभिहित किया गया है।
- ब्राह्मणों, मंदिरों व मठों को भी दान में जमीन दिया गया। राजस्व विभाग में अधिकाधिक हिन्दू (टोडरमल)। हेमू अपना सार्वजनिक जीवन बाजार के शहना से आरंभ कर मंत्री पद तक पहुँचा।

अकबर

- मरियम मकानी / हमीदाबानू बेगम बेटा। लालन पालन कार्य जीजी अनगा तथा माहम अनगा ने किया। पहली शादी रूकैय्या बेगम से (हिन्दाल की बेटी)। प्रारंभिक तीन वर्ष असकरी के सरंक्षण में रहा।
- अकबर के पुत्र - सलीम, मुराद, दानियाल।

Scanned by CamScanner

- 1551 में अकबर गजनी का गवर्नर। तत्पश्चात् लाहौर का गवर्नर।
- सरहिंद की विजय का वैधानिक श्रेय अकबर को।
- सर्वप्रथम हुमायूँ ने मुनीम खाँ को अकबर का संरक्षक नियुक्त किया फिर बैरम खाँ को। दोनों को खानखाना की उपाधि प्राप्त थी।
- अब्दुल लतीफ - अकबर का शिक्षक।
- हुमायूँ की मृत्यु की खबर 17 दिनों तक गुप्त रखी गई, क्योंकि अकबर उस समय पंजाब का गवर्नर था और इस बीच मुल्ला बख्शी को हुमायूँ के रूप में पेश किया जाता रहा, जिसका चेहरा हुमायूँ से मिलता था।
- 1556 में कलानौर में (पंजाब में) अकबर का राज्यारोहण बैरम खाँ की देखरेख में मिर्जा अब्दुल कासिम ने किया था।
- **1556-60 का काल** - अकबर के ऊपर बैरम खाँ का प्रभाव रहा, जो उसका अत्तालिक / वकील था। बैरम खाँ (शिया) हुमायूँ का भी सहयोगी रहा था। 1556 में ही हेमू (हेमचन्द्र/विक्रमजीत/विक्रमादित्य) (जो कि आदिल शाह का सेनापति था) का दिल्ली पर कब्जा। पानीपत की लड़ाई में बैरम खाँ ने विजय में योग दिया। इसके खिलाफ दरबारियों का षड्यंत्र हुआ और अंत में बैरम खाँ का दरबार व प्रशासन में बढ़ते प्रभाव के तहत वकील के पद से विमुक्त कर दिया विद्रोह - दमन - माफी।
- मक्का जाते हुए अहमदाबाद में (पाटन) एक अफगान के द्वारा बैरम खाँ की हत्या।
- अबुल फजल ने बैरम खाँ के पतन में सबसे अधिक उत्तरदायी माहम अनगा को ठहराया है।
- अकबर और बैरम खाँ के बीच युद्ध तिलवाड़ा नामक स्थान पर हुआ था।
- **1560-62 - पेटीकोट का शासन** - इस दौरान धाय माँ माहम अनगा का प्रभाव अकबर पर रहा। 1561 में मालवा अभियान, जहाँ बाजबहादुर शासन कर रहा था, लूट के माल में कम केन्द्र को भेजना व बाजबहादुर की रानी रूपमति द्वारा आत्महत्या के कारण अधम खाँ (माहम अनगा का बेटा) को आगरा बुलाया गया जहाँ इसने वकील शमसुद्दीन अतका (अकबर की नर्स जीजी अनगा का पति) को हत्या व इसके बाद अधम खाँ को किले की दीवार से फिंकवा दिया।
- **1560-67 का विद्रोह** - उजबेक और मिर्जा का विद्रोह। 1560 में जौनपुर में खान-ए-जमाँ उजबेक एवं 1564 में मालवा में अब्दुल्ला उजबेक।
- 1586 में युसूफजायियों का विद्रोह तथा इसके तहत बीरबल की मृत्यु।
- अकबर का सौतेला भाई एवं काबुल के गवर्नर मिर्जा हाकीम का विद्रोह - दमन व मिर्जा गुजरात भागा।
- 1599 - सलीम ने पुर्तगालियों के साथ षड्यंत्र कर विद्रोह कर दिया।
- 1602 में सलीम के इशारे पर चन्दुशाह के मशविरे से वीर सिंह बुन्देला ने अबुल फजल की हत्या कर दी।

★ **अभियान** :-

- 1562 - मालवा विजय एवं बाजबहादुर को मनसब दिया।
- 1564 - गढ़कतंगा पर आसफ खाँ का सफल अभियान, जहाँ चंदेल कुमार (दुर्गावती एक वीर योद्धा एवं तत्पर शिकारी थी) को हटा अमनदास (15वीं सदी) के स्थापित गढ़कतंगा पर नियंत्रण।
- 1568 में चित्तौड़ के किले पर विजय, कत्लेआम, जयमल - फत्ता की मूर्तियाँ आगरा के किले के द्वार पर स्थापित कराया।
- चित्तौड़ विजय के उपलक्ष्य में फतहनामा जारी किया।
- 1569-70 में कालिंजर के रामचंद्र ने आत्मसमर्पण किया फिर मारवाड़ (जोधपुर) शासक चंद्रसेन

Scanned by CamScanner

और फिर जैसलमेर के शासक रावल हरराय का समर्पण।

- 1570 तक मेवाड़ एवं इसके सहयोगी (डूंगरपुर - बाँसवाड़ा - प्रतापगढ़) को छोड़ तमाम राजपूताना पर अकबर का प्रत्यक्ष या परोक्ष नियंत्रण।
- मेवाड़ की समस्या - चित्तौड़ के किले के पतन के बाद उदय सिंह ने उदयपुर को राजधानी बनाया। 1572 में उसकी मृत्यु के बाद राणा प्रताप सिंह (भीलों का कीका) शासक बना - गोलकुंडा में।
- 1572 में मानसिंह / भगवान दास / टोडरमल का दूत इनसे मिला व राणा के व्यक्तिगत दरबार में उपस्थिति के प्रश्न पर अस्वीकृति एवं 1576 में **हल्दी घाटी की लड़ाई**। राणा के सहयोगी - भील, हाकीम खाँ सुर, राठौर, ग्वालियर का शासक।
- अकबर की सेना मानसिंह व आसफ खाँ के नेतृत्व में। युद्ध में गोगूंडा पर कब्जा। बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, सिरोही एवं बुन्दी पर नियंत्रण।
- पुनः 1577 में शाहबाडा (अकबर का बख्शी) का कुम्भलगढ़ पर नियंत्रण। इसके बाद प्रतापसिंह ने अपनी राजधानी चाँवड़ में बनाया। 1580 के बाद आंतरिक विद्रोह एवं उत्तर पश्चिमी सीमा के खतरे के मद्देनजर मेवाड़ की ओर से अकबर विमुख। राणा प्रताप सिंह भारत में गुरिल्ला युद्ध पद्धति के प्रथम प्रतिपादक।

★ **राजपूत नीति** :- विश्वास - उच्च पद - आंतरिक स्तर पर अहस्तक्षेप एवं वैवाहिक नीति के आधार पर उसने (अकबर) अमीर वर्ग में राजपूतों को शामिल कर एक बड़े क्षेत्र पर नियंत्रण कर, प्रशासनिक सुव्यवस्था एवं अपने विरोधियों तथा विद्रोहियों पर नियंत्रण रखा। किंतु अकबर की अधीनता न स्वीकार करने वाले के खिलाफ अभियान तथा विद्रोहियों का दमन किया। अधीनता स्वीकार करने वाले शासकों को अपनी धार्मिक एवं सामाजिक नीति के आधार पर भी राजपूतों को संतुष्ट कर भारतीय आवाम के बीच मुगल साम्राज्य के बीच आम स्वीकृति को संभव बनाया।

★ **वैवाहिक संबंध** :- आमेर के कछवाहा शासक भरमल की पुत्री हरकाबाई से 1562 में वैवाहिक संबंध एवं भारमल के पुत्र भगवानदास को 5000 तथा भगवानदास के पुत्र मानसिंह को 7000 का मनसब दिया था।

नोट :- मानसिंह के अलावा अकबर ने सिर्फ एक और मिर्जा अजीज कोका को 7000 का मनसब दिया था।

- जैसलमेर व बीकानेर के साथ वैवाहिक संबंध।
- मारवाड़ के उदयसिंह की पुत्री जगतगोसाई / जोधाबाई के साथ सलीम का विवाह। इस विवाह में डोला लड़की के घर गया था और वहाँ हिन्दू रीति रिवाज से विवाह सम्पन्न हुआ था। रणथंभौर के हाड़ा के साथ अकबर का वैवाहिक संबंध नहीं था, किंतु उच्च पद दिया था।
- गुजरात - 1572 में गुजरात विजय एवं करनाल में विद्रोही मिर्जा का दमन। इस दौरान ही अकबर ने खंभात में पहली बार समुद्र देखा और यही पुर्तगालियों से मुलाकात की थी। वहाँ गुजरात के विद्रोह का दमन करने सिकरी से गुजरात सिर्फ 11 दिन में पहुँचा और गुजरात विजय की याद में ही फतेहपुर सिकरी में बुलंद दरवाजा का निर्माण करवाया। (1602)

★ **धार्मिक नीति** :-

- 1562 में युद्धबंदियों के बालात् धर्म परिवर्तन पर रोक।
- 1562 में दास व्यापार पर रोक।
- 1563 में तीर्थयात्रा कर पर रोक।

Scanned by CamScanner

- 1564 में जजिया कर की समाप्ति।
- 1571 में राजधानी बदलकर आगरा से फतेहपुर सिकरी।
- 1575 में इबादतखाना - जहाँ विभिन्न विषयों पर बृहस्पतिवार की संध्या पादशाह चर्चा करता था। यहाँ उदार व रूढ़ मुस्लिम वर्ग परस्पर विभाजित थे - उदार - शेख मुबारक, अबुल फजल, फैजी। रूढ - शेख अब्दुल नवी (मुख्य सद्र)।
- 1577 से अन्य धर्मावलंबी भी इबादतखाना में आमंत्रित - हिन्दू में पुरूषोत्तम दास जैन में हरिविजय सूरी, पारसी में मेहरजी राणा तथा ईसाई में मॉन्सेरात एवं एक्वाविवा।
- 1579 में महजर (प्रारूप शेख मुबारक द्वारा) की घोषणा, जिसमें अकबर को **अमीर-उल-मोमनीन** कहा गया है।
- अकबर ने फैजी द्वारा तैयार खुत्बा पढना आरंभ किया, पैगम्बर व खलीफा की शैली में।
- महजर के माध्यम से स्वयं को **इमाम-ए-आदिल** घोषित किया - इस्लाम का सर्वश्रेष्ठ व्याख्याकार।
- मुजतहिद - (इस्लामी विधि का व्याख्याकार) अमीर-उल-मोमनीन (मुसलमानों का नेता), सद्र-उस-सुदूर/ काजी-उल-कुजात (मुख्य न्यायाधीश), अमीर-ए-आदिल (न्याय परक शासक) ये तमाम शक्तियाँ महजर के माध्यम से अकबर के पास चली गयी थी।
- पर्याप्त विरोध के कारण 1582 में अकबर ने इबादतखाना बंद कर दिया।
- बदायूँनी अकबर पर **अमोघत्व** का आरोपण का आरोप लगाता है।
- **तौहिद-ए-इलाही** (पवित्र एकेश्वरवाद) - इसकी अवधारणा शेख मुबारक ने विकसित की थी।
- इसकी शुरूआत रविवार को हुई। इसके तहत विश्वासी अकबर के समक्ष **पाबोस** करता था। फिर अकबर उसे शिस्त (मंत्र) देता था। ये लोग एक-दूसरे को **अल्लाह-हो-अकबर, जल्लेजला-हो** कहकर संबोधित करते थे। इन्हें शाकाहार करना होता था। इसका कोई निर्धारित धर्मग्रंथ या पुरोहित वर्ग नहीं था।
- इसके सदस्य - बीरबल, अबुल फजल, फैजी आदि 19 सदस्य।
- दीन-ए-ईलाही धर्म में दीक्षित शिष्य को चार चरणों अर्थात् **चहारगाना-ए-इख्लास** को पूरा करना होता था। ये चार चरण थे - जमीन, संपत्ति, सम्मान एवं धर्म (छोड़ना पड़ता था)।
- बदायूँनी ने इसके लिए अकबर पर **इंसान-ए-कामिल** (अल्लाह के समकक्ष) होने का आरोप लगाया है।
- **सुलह-ए-कुल** की नीति
- 1581 का विद्रोह - यह विद्रोह मूलतः मुल्लाओं का था, जिसमें असंतुष्ट अमीर वर्ग शामिल हो गया था और इन्होंने अकबर के खिलाफ खुत्बा पढ़ा एवं **मिर्जा मुहम्मद हाकिम** को शासक घोषित किया।

जहाँगीर (1605-27 ई.)

- माता - हरकाबाई (मरियम-उज-जमानी)।
- **विवाह** - मानबाई (शाह बेगम) - इसने जहाँगीर के व्यवहार से / बेटा के विद्रोह की आत्मग्लानि से अफीम खाकर आत्महत्या कर ली।
- जोधाबाई / जगतगोसाई
- नूरजहाँ - 1611 ई.।

★ **मेवाड़ अभियान** :- 1606-16 तक अभियान और में मिर्जा अजीज कोका एवं शाहजादा खुर्रम का सफल अभियान और संधि अमर सिंह (राणा) ने कर्ण सिंह (युवराज) को दरबार भेजना स्वीकार किया जिसका भव्य स्वागत जहाँगीर ने किया।

Scanned by CamScanner

- बंगाल में 12 भुइयाँ (मुसा खाँ + इस्लाम खाँ) के विरूद्ध शेख सलीम चिश्ती के पौत्र इस्लाम खाँ को भेजा। सफल अभियान। अफगान मनसबदारी में शामिल।
- अहमदनगर - 1608 से 1617 तक अनेक अभियान। अंत में बालाघाट और अहमदनगर मुगल साम्राज्य का अंग बना। इस अभियान की सफलता के आधार पर खुर्रम को तीस हजार जात का मनसब और शाहजहाँ की उपाधि। 1611 में उड़ीसा अभियान, खुर्दा विजय - वैवाहिक संबंध।
- जहाँगीर के काल में प्रथमतः मराठा सरदारों की सेवा ली गई।
- कांगड़ा - 1620 में कांगड़ा पर अधिकार, खुर्रम के नेतृत्व में।
- 1622 में शाह अब्बास ने कंधार पर अधिकार कर लिया।

★ **विद्रोह** :- 1606 में खुसरों का विद्रोह। इसे संरक्षण देने के आरोप में गुरू अर्जुनदेव को सजा-ए-मौत दी। खुसरों को अंधा बनाकर बुरहानपुर में रखा गया, जहाँ खुर्रम के निर्देश पर 1620 ई. में उसकी हत्या कर दी।

- 1611 ई. में सिंधु क्षेत्र में **रोशनिया संप्रदाय** (नेता - अहमद) के लोगों का विद्रोह, किंतु दमन।
- अफगान विद्रोह - 1612 ई. में उस्मान खाँ के नेतृत्व में।
- खुर्रम का विद्रोह - कंधार का सशर्त अभियान का प्रस्ताव ठुकराये जाने के बाद शहरयार के बढ़ते कद से सशंकित खुर्रम ने विद्रोह किया, जिसने उसे आसफ खाँ का सहयोग मिला किंतु अंत में महावत खाँ एवं शहजादा परवेज के द्वारा विद्रोह का दमन - आत्मसमर्पण - जहाँगीर द्वारा माफी। फिर दक्कन में बालाघाट का सूबेदार बना।
- 1626 में महावत खाँ का विद्रोह और इसने नूरजहाँ सहित जहाँगीर को कश्मीर में कैद कर लिया, किंतु ये कैद से निकलने में कामयाब। किंतु इसके कुछ दिन बाद ही शहजादा परवेज (चालीस हजार जात, तीस हजार सवार का मनसबदार) की मृत्यु एवं 1627 में लाहौर (भीमवार) में जहाँगीर की मृत्यु। इसके बाद नूरजहाँ यहीं रही।

नूरजहाँ

- वास्तविक नाम - मेहरून्निशा। जन्म - कंधार में। पिता - इत्मादउद्दौला। माता - अस्मत बेगम।
- भाई - आसफ खाँ। पूर्व पति - शेर अफगान।
- खुसरो विद्रोह के जवाब-तलब के दौरान बर्दवान में इसकी हत्या।
- जहाँगीर नूरजहाँ से नौरोज के दिन मीना बाजार में मिला और 1611 ई. में इससे विवाह किया एवं पहले **नूरमहल** फिर **पादशाह बेगम** फिर 1616 में इसे **नूरजहाँ** की उपाधि दे दी।

नोट :- जहाँगीर स्वयं को **नूरूद्दीन** कहता था।

- 1616 के बाद फरमान एवं सिक्के पर भी नूरजहाँ का नाम आने लगा।
- इसके पिता को सात हजार का मनसब व भाई मीर हसन (आसफ खाँ) को **खान-ए-शमा** व दूसरे भाई इब्राहिम खाँ को बिहार का गवर्नर बनाया।

नोट :- जहाँगीर विश्वास करता था कि राजतंत्र मूल व वंश को पहचानता है।

- पेलसर्ट ने नूरजहाँ को वास्तविक शासक घोषित किया है।
- जहाँगीर न्यायप्रिय शासक था। आगरा के किले में न्याय का घंटा (इसके पूर्व इल्तुतमिश का न्याय का जंजीर) व तुजुक में 12 अध्यादेश का प्रतिपादन।

Scanned by CamScanner

- शराब उत्पादन व बिक्री पर प्रतिबंध।
- मीर बहरी (तटकर) / तमगा का अंत।
- मानवीय दंड की अनुशंसा।
- खालसा व जागीर के मध्य के अधिकारी वैवाहिक संबंध शहँशाह की इजाजत से ही कर सकते हैं।
- रविवार (अकबर का जन्मदिन), बृहस्पतिवार (जहाँगीर के राज्यारोहण का दिन) को पशु हत्या पर रोक।
- मृत अमीर की संपदा उसके उत्तराधिकारी को मिले।
- किसी भी व्यापारी की गठरी उसकी अनुपस्थिति व अनुमति के बगैर न खोला जाय।

- अलतमगा जागीर प्रथा की शुरूआत।

शाहजहाँ (1627-66 ई.)

- शाहजहाँ के ससुर असफ खाँ ने शहरयार (नूरजहाँ की बेटी लाडली बेगम का पति) को अंधा बनाया एवं कुछ दिनों के लिए खुसरों के अल्पव्यस्क पुत्र दवार बख्श को शासक बनाकर शाहजहाँ के पादशाही का मार्ग प्रशस्त किया। इस प्रकार 1628 में जाकर शाहजहाँ का राज्याभिषेक हुआ।
- शाहजहाँ की माता - जगतगोसाई (मारवाड़ के मोटा राजा उदयसिंह की पुत्री) ने 1592 में लाहौर में जन्म दिया।
- आसफ खाँ को चाचा की उपाधि एवं 9000 का जात एवं सवार दूह अस्पा का दर्जा दिया।
- महावत खाँ को 7000 का मनसव दिया।
- आसफ खाँ की पुत्री अर्जुमंद बानो बेगम (मुमताज महल) से 1612 में विवाह। इसे मल्लिका-ए-जमानी का दर्जा मिला। इसके छः बच्चे - जहाँआरा, रौशनआरा, दारा, सुजा, औरंगजेब व मुराद।

★ विद्रोह :- खान-ए-जहाँलोदी (पीर खाँ) का दक्कन में विद्रोह फिर दमन।

- ओरछा के जुझार सिंह बुंदेला का विद्रोह (1628) किंतु औरंगजेब द्वारा दमन। ओरछा का शासक देवी सिंह को बनाया।
- महोबा के चंपत राय का विद्रोह (कालांतर में औरंगजेब के काल में इसके पुत्र छत्रशाल का विद्रोह)।
- पुर्तगालियों का हुगली में दमन।
- 1638 में कंधार का गवर्नर अली मर्दान मुगलों से मिल गया और कंधार फिर से मुगल साम्राज्य का अंग बना।

★ **दक्षिण नीति** :- खान-ए-लोदी के विद्रोह को समर्थन देने से अहमदनगर से क्रुद्ध शाहजहाँ वीजापुर को अहमदनगर का 1/3 भाग देने का वादा कर तटस्थ कर दिया। महावत खाँ का अहमदनगर का अभियान यद्यपि वीजापुर ने वीच में ही अपना पक्ष वदल लिया और स्वयं अहमदनगर पर कब्जा करना चाहा।

- इस वीच शाहजी भोंसले से शाहजहाँ का संवंध - पूणा का जागीर दिया और यहीं जागीर अहमदनगर के विद्रोही (मुगल पक्षधर) मलिक अंवर (जहाँगीर के काल में एक चुनौती) का पुत्र एवं वजीर को दिया, जिससे शाहजी भोंसले वीजापुर के साथ मिल गए। 1633 में महावत खाँ का अभियान सफल। इसकी सफलता को स्थायित्व देने के लिए वीजापुर एवं गोलकुंडा से संधि 1636 में।
- संधि प्रस्ताव - वीजापुर मुगलों को युद्ध का हर्जाना देगा व मुगल वीजापुर को अहमदनगर का अंश देंगे। वीजापुर शाहजी को मुगल क्षेत्र के पास नियुक्त नहीं करेगा एवं वीजापुर - गोलकुंडा को दक्षिण के हिंदू क्षेत्र में 2:1 के हिसाव से विस्तार का अधिकार होगा तथा दोनों के वीच विवाद की

Scanned by CamScanner

स्थिति में मुगलों की मध्यस्थता होगी। संधि को प्रमाणिक बनाने के लिए शाहजहाँ ने सुल्तान को अपना पुत्र कहा एवं संधि पत्र पर अपने हथेली के छाप वाला वसीयत भेजा, किंतु शाहजहाँ इस वसीयत के प्रति प्रतिबद्ध नहीं पर इस तरह से दक्षिण में शाहजहाँ (मुगलों) की विश्वसनीयता नहीं रहीं।

- पुनः 1653-57 तक औरंगजेब दक्षिण का गवर्नर रहा। इस दौरान औरंगजेब ने गोलकुंडा के एक अधिकारी मीरजुम्ला के पक्ष में अहमदनगर के हस्तक्षेप एवं उत्तराधिकार के प्रश्न पर बीजापुर में हस्तक्षेप का प्रयास।

★ **शाहजहाँ एवं मध्य एशिया** :- उजबेक क्षेत्र में आतंरिक असंतोष की दशा में शाहजहाँ ने वहाँ नजर मुहम्मद के पक्ष में मुराद को फिर औरंगजेब को भेजा। यह अभियान असफल रहा। सफाविदों ने पुनः 1648-49 में कंधार मुगलों से छीन लिया व इसे प्राप्त करने का मुगलों का समस्त प्रयास निरर्थक रहा। फिर कंधार कभी मुगल साम्राज्य का अंग नहीं बन पाया।

- शाहजहाँ के काल में आकाल - स्रोत - लाहोरी का पादशाहनामा एवं इटालियन यात्री पीटर मुंडी। राहत कार्य - भू-राजस्व माफी। सहायता उपलब्ध कराना। लंगर चलाना।

नोट :- शाहजहाँ ने राजपूतों से वैवाहिक संबंध की नीति त्याग दी।

- उत्तराधिकार का प्रश्न - दारा शिकोह को शाहजहाँ ने वली अहद घोषित कर उसे 60000 मनसब दिया। औरंगजेब बीमार पिता को देखने की दलील दे आगरा की ओर ससैन्य बढ़ा। इस समय औरंगजेब दक्षिण / दारा - उत्तर पश्चिम, मुराद - गुजरात एवं शुजा (शुजा शिया बना था) बंगाल का गवर्नर था। सभी की दृष्टि आगरा पर थी।
- दारा शिकोह - शुजा के खिलाफ सुलेमान शिकोह को भेजा जो बनारस में शुजा को पराजित किया।
- मालवा में औरंगजेब व मुराद के बीच साम्राज्य विभाजन की संधि।
- धरमट की लड़ाई - अप्रैल 1658 में जसवंत को औरंगजेब ने हराया।

मई 1658 में शाहजहाँ नजरबंद।

- दिसंबर 1658 में शुजा को खजवा की लड़ाई में औरंगजेब ने पराजित किया।
- मुराद को गिरफ्तार - हत्या का अरोप - मृत्युदंड
- मार्च 1659 में देवराय की लड़ाई में अंततः दारा को औरंगजेब ने पराजित किया। बलूची सरदारों ने दारा को औरंगजेब को सौपा जिस पर विधर्मिता एवं राजद्रोह का आरोप लगया और उसे मृत्युदंड दिया।

इस संघर्ष में जहाँआरा द्वारा शिकोह के पक्ष में थी फिर भी वाद में औरंगजेब ने इसे अपने शासनकाल में साम्राज्य की प्रथम महिला का दर्जा दिया।

- रौशनआरा औरंगजेब के पक्ष में थी।

औरंगजेब सामूगढ़ की विजय के बाद बागानूर में अपना दरबार लगाया व स्वयं को शहँशाह घोषित किया।

- शाहजहाँ को आगरा के किला के शाह बुर्ज में कैद रखा, जहाँ 1666 में उसकी मृत्यु हुई।

औरंगजेब

- 1658-59 में दो बार राज्यारोहण। स्वयं अपना वजीर।
- पत्नियाँ - 1) दिलराज बानू बेगम (रबिया दुर्रानी) 2) नवाब बाई - मुअज्जम (बहादुर शाह) इसी का बेटा। 3) औरंगाबादी महल 4) उदयपुरी महल (संभवतः जार्जियन)
- पुत्र - 1) मुहम्मद 2) मुअज्जम शाह आलम 3) आजम 4) कामबख्श 5) अकबर (उदयपुरी

Scanned by CamScanner

महल का बेटा) - इसके बारे में औरंगजेब ने कहा था कि दासी का पुत्र कभी अच्छा नहीं हो सकता भले ही वह शहँशाह के द्वारा ही क्यों न पैदा हो।

★ **अभियान** :-

- दाउद खाँ ने पलामू पर विजय किया।
- आसाम / बंगाल - मीर जुमला अहोम शासक जयध्वज को हराया किंतु अधिपत्य स्थापित नहीं हुआ।
- चितगाँव / चिट्टगोंडा पर कब्जा।
- शाइस्ता खाँ ने पुर्तगालियों को चिट्टगोंग से निकाला। किंतु 1661 में अहोम शासक चक्रध्वज ने गुआहाटी मुगलों से हस्तगत कर लिया।
- राजपूत :- जसवंत सिंह को 7000/7000 का मनसब। मेवाड़ के राणा राजसिंह को 6000 / 6000 का मनसब। किंतु मारवाड़ में जसवंत सिंह की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार के प्रश्न पर हस्तक्षेप / इंदर सिंह को टीका दिया / दुर्गादास राठौर जसवंत सिंह के मृत्युउपरांत पुत्र अजीत सिंह को राजा बना विद्रोह किया।
- जजिया लगाया गया तो मेवाड के राणा राज सिंह ने भी विद्रोह कर दिया व दुर्गादास को सहयोग / कालांतर में मारवाड़ के शासक राणा जगत सिंह से संधि एवं 1698 में अजीत सिंह को मारवाड़ का राजा स्वीकार किया गया।

★ **अन्य विद्रोह** :-

- जाट विद्रोह - 1667 से 1669 गोकुल का विद्रोह मथुरा में। (धार्मिक + कृषकीय मिश्रित कारण) दमन। 1685 में राजाराम के नेतृत्व में जाटो ने एक बार फिर विद्रोह कर दिया जो पहले से ज्यादा आक्रामक था। इस बार सिकन्दरा से अकबर के कब्र से उसकी हड्डियाँ निकाला।
- चुड़ामण जाट ने एक सुव्यवस्थित सैन्य शक्ति का रूप जाटों को दिया। इसके बाद बदन सिंह ने भरतपुर राज्य की स्थापना की। इनका सर्वश्रेष्ठ शासक सुरजमल जिसें जाटों का अफलातून कहा जाता है।
- 1672 सतनामी विद्रोह :- ये मुण्डिया साधु भी (जगजीवनदास का सम्प्रदाय) कहलाते थे। इसका केन्द्र नारनौल एवं नेता वीरभान थे।
- बुंदेला विद्रोह

- अकबर - वीरसिंह
- जहाँगीर - जुझार सिंह
- शाहजहाँ - चंपत राय
- औरंगजेब - छत्रशाल

- छत्रसाल मालवा में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की जिसकी महिमा का बखान वीररस के कवि भूषण ने किया।
- सिक्ख - तेगबहादुर को मृत्युदंड क्योंकि कश्मीर के गवर्नर की बर्बरता की आलोचना की थी।
- इसके बाद हरगोविंद ने सिक्खों को सैन्य शक्ति बनाया।
- गुरुगोविन्द सिंह ने राज्य की स्थापना की - लौह गढ़, फतेहगढ़, आनंदगढ़ आदि का निर्माण। पहाड़ी राजाओं पर विजय। मुगल गवर्नर वजीर खाँ से मुकाबला व गुरू के दो शिष्यों की हत्या।
- जफरनामा / औरंगजेब की मृत्यु / मनसब / 1708 में नान्देड में मृत्यु।
- मराठा शिवाजी का उभरना।

★ **दक्षिण नीति** :-

- 1655-65, 1668-84, 1684 -..... तीन चरणों में दक्षिण नीति।
- औरंगजेब रिश्वत से परेंडा शोलापुर प्राप्त किया। प्रथम चरण के नेता जयसिंह थे।
- 1668-84 इस दौरान गोलकुंडा के मदन्ना-अखन्ना-शिवाजी का त्रिपक्षीय सहयोग संगठन।

Scanned by CamScanner

1686 - बीजापुर, 1687 गोलकुंडा, 1698 - जींजी

- औरंगजेब बीजापुर - गोलकुंडा के सहयोग / तटस्थता से मराठों को दबाना चाहता है लेकिन इनसे सहयोग न पाकर उनको (1686) में बीजापुर, (1687) में गोलकुंडा विजय व इसके बाद संघमेश्वर का छापा व शम्भा की हत्या एवं शाहू जी को कैद। अब मराठे अनियंत्रित हो गए।
- 1698 में जींजी पर मुगल कब्जा।
- (1703) में मराठों के साथ वार्ता आरंभ। (1706) में वापस पुरानी नीति पर। (1707) में मृत्यु।

★ धार्मिक नीति :-

- यद्यपि जवाबियत (फतवा-ए-आलमगिरी) का अनुपालन करता था, किंतु हनीफी विचार के अनुसार यह सुन्नी के शरियत की मान्यताओं को पर्याप्त महत्व देता था। स्वयं एक उत्साही सुन्नी था और जिंदा पीर कहलाता था एवं युद्ध के मैदान में भी नमाज पढ़ना नहीं भूलता था। दारूल हर्व को दारूल इस्लाम बनाना चाहता था।
- सिक्के से कलमा हटाया। ज्योतिष प्रचलन पर रोक। नौरोज पर प्रतिवंध। झरोखा दर्शन। इतिहास लेखन। तुलादान। दरबार में संगीत पर रोक। नवीन मंदिर का निर्माण नहीं व कई मन्दिरों को तोड़ा।
- (1679) में जजिया लागू। कई कर जो शरियत के प्रतिकूल थे, उन्हें समाप्त कर दिया व इस्लामिक जीवन पद्धति को कार्यरूप देने के लिए मुहतसिव (नैतिक निरीक्षक + मापतौल का निरीक्षक) नियुक्त किया।

1679 जजिया लागू

नोट :- स्वयं वीणा बजाता था।

- शाहजादे एवं स्त्रियाँ सूफियों के दरगाह पर जाते रहे।

↳ सबसे ज्यादा हिन्दू मनसवदार इसी के काल में।

↳ सबसे ज्यादा इतिहास लेखन इसी के काल में।

मुगलकालीन प्रशासनिक ढाँचा

- भारतीय पृष्ठभूमि में अरवी-फारसी पद्धति पर आधारित मुगल प्रशासन Check & Balance के सिद्धांत पर टिका हुआ था। इसके तहत सूवेदार व दीवान के वीच अधिकारों का विभाजन जहाँ मिस्र के शासकों द्वारा अपनाई गई प्रणाली पर आधारित था, वहीं मनसवदारी व्यवस्था मध्य एशियाई पृष्ठभूमि से ग्रहण की गई थी। शासन की धुरी मुगल सम्राट ही हुआ करते थे। फिर भी अत्यंत केन्द्रीयकृत मुगल प्रशासन की विविध गतिविधियों को संचालित करना अकेले सम्राट के लिए संभव नहीं। फलस्वरूप एक मंत्रीपरिषद् (विजारत) भी। ध्यातव्य है कि विभिन्न शासकों के काल में मंत्रियों की हैसियत वदलती रहती थी।

★ वकील :- अकवर के काल में मुगल प्रधानमंत्री को वकील कहा जाता था। सैद्धांतिक रूप से वकील मंत्रियों का प्रमुख होता था, किंतु जिन परिस्थितियों में वैरम खाँ वकील बना, उनमें वकील का पद अचानक सर्वोच्च शक्तिमान हो गया। किंतु अपने अधिकारों के दुरूपयोग के एवज में 1560 तक अकवर ने वैरम खाँ के समस्त अधिकार छीनकर उसे वर्खास्त कर दिया।

- वकील के पद को गंभीर आघात अकवर के शासनकाल के आठवें वर्ष जब उसने दीवान-ए-वजारत-ए-कुल का एक नया पद वनाया और उस पर मुजफ्फर खाँ को नियुक्त किया। यह पद राजस्व और वित्तिय मामलों के प्रवंध के लिए वनाया गया था।
- जहाँगीर के शासनकाल के पहले 4 एवं 21वें वर्ष के अतिरिक्त वकील का पद प्रायः खाली ही रहा। शाहजहाँ ने अपने शासनकाल के पहले 14 वर्ष तक आसफ खाँ को इस पद पर रखा और फिर इस पद को ही समाप्त कर दिया।
- अकवर ने वकील पद के अधिकार एवं कर्तव्यों को चार मंत्रियों के वीच वाँट दिया -

Scanned by CamScanner

1) **दीवान** :- मुख्यतः वित्त एवं राजस्व का सर्वोच्च अधिकारी, किंतु अन्य विभागों पर भी इसका प्रभाव। यह सम्राट और शेष अधिकारियों के बीच की एक कड़ी था।

- इसके सहायक अधिकारी - दीवान-ए-खालिसा (शाही भूमि का अधिकारी), दीवान-ए-तन (वेतन एवं जागीरों से संबंधित), मुस्तौफी (आय-व्यय का निरीक्षक), मुसरिफ (मुख्य लेखपाल), दीवान-ए-वयुता (कारखानों इत्यादि के लिए), दीवान-ए-तवजिय (सैन्य लेखे जोखे के लिए) इत्यादि।

प्रमुख दीवान	- मुजफ्फर खाँ तुरबती, राजा टोडरमल, एवाजशाह मंसूर - अकबर कालीन।
	- ऐत्मादुद्दौला - जहाँगीर कालीन।
	- सादुल्ला खाँ - शाहजहाँ कालीन।
	- असद खाँ - औरंगजेब कालीन - सर्वाधिक वर्षों (31 वर्ष) तक दीवान रहा।

- यह पद एक स्थानांतरणीय पद था, जिसपर नियुक्ति के दौरान व्यक्ति की वित्तीय योग्यता को सैनिक योग्यता पर वरीयता दिया जाता था।

2) **मीर बख्शी** - राजा का मुख्य सैन्य सलाहकार + सेना की भर्ती / उन्नति / अवनति / अनुदान की जिम्मेदारी। शांतिकाल में सेना का वेतन वजीर की जिम्मेदारी व युद्धकाल में बख्शी की।

- सरखत नामक प्रमाण पत्र पर बख्शी के हस्ताक्षर के बाद ही सेना को मासिक वेतन निर्धारित। साथ ही मनसबदारों के पद पर सक्षम लोगों की नियुक्ति हो यह देखने का दायित्व भी इसी का।
- प्रांतों से वाकिया नवीस खबरें सीधे मीर बख्शी को ही भेजते थे और वहीं उस पर गौर करता था।
- सैन्य मंत्री होने पर भी वह मुख्य सेनानायक नहीं। युद्धकाल के दौरान उसकी कुछ सीमाएँ -
  - यदि सम्राट युद्ध भूमि में उपस्थित हो तो मीर बख्शी सामान्य दायित्व निभाता था।
  - उसे सेना के किसी भाग विशेष का प्रभाग सौंपा जा सकता था और विशेष अवसरों पर पूरे अभियान की जिम्मेदारी भी।
  - ऐसे सेना के साथ भी भेजा जा सकता था, जो सीधे शहजादे या बडे अमीर के नियंत्रण में हो।
- मीर बख्शी की सहायता के लिए दो अन्य बख्शी। स्वयं वह पहला बख्शी एवं उसके सहायक क्रमशः दूसरे (बख्शी-ए-हुजूर) और तीसरे (बख्शी-ए-शाहगिर्दपेशा) बख्शी कहलाते थे।

3) **खान-ए-सामान या मीर-सामान** :- अकबर के काल में स्थापित यह पद शाहजहाँ के काल में मंत्री पद बन गया और वजीर का पद प्राप्त करने की अंतिम सीढ़ी माना जाने लगा। औरंगजेब के काल में इसे खान-ए-सामान कहा जाने लगा। इसके पूर्व मीर-ए-सामान।

- भंडार/ संभरण/ आपूर्ति/ लोककार्य/ शाही उद्योग/ वाणिज्य की जिम्मेदारी।
- इसके सहायक - दीवान-ए-वयूतात, दरोगा, मुसरिफ, तहविलदार थे।
- दस्तूर-उल-अमल में इसे **व्यय का अधिकारी** कहा गया है।

4) **सद्र** :- मुख्य काजी व मुख्य मुफ्ती का पद, सामान्यतया न्याय/ विधि की व्याख्या/ धार्मिक अनुदान की जिम्मेदारी। राजा स्वयं विधि निश्चय के लिए साप्ताहिक आदालत द्वारा न्याय निर्णय (सच्चाई और कानून दोनों रूप में) -

◦ अकबर - बृहस्पतिवार	◦ जहाँगीर - मंगलवार	◦ शाहजहाँ - बुधवार

- अन्य अधिकारियों के विपरित सद्र का पद **अस्थानांतरणीय**। साथ ही सद्र सामान्यतया मनसबदार नहीं, किंतु कुछ अपवाद भी। जैसे - अकबर और जहाँगीर के काल में **सद्र-ए-जहाँ**, शाहजहाँ काल में **मुसब्बी खाँ** तथा औरंगजेब के काल में **सैय्यद जलाल** को मनसब दिया गया।
- अकबर 1578 ई. से प्रांतों में भी सद्रों की नियुक्ति करने लगा, जिससे केन्द्रीय सद्र का एकाधिकार समाप्त।
- मुगल काल का पहला सद्र **शेख गदाई** (बैरम खाँ के संरक्षण काल में)।

Scanned by CamScanner

- अन्य अधिकारी :-
- काजी-उल-कुजात (मुख्य न्यायधीश) - दीवानी और फौजदारी दोनों तरह के मुकदमें + मूल और अपीली दोनों तरह के मुकदमें। इनकी सहायता के लिए मुफ्ती।
- शाही वाकयानवीस - गुप्तचर व्यवस्था का प्रमुख, राज्य के विभिन्न भाग से सूचना संग्रहित कर केन्द्र को सूचित रखना।
- मुख्य मुहतसिब - भार एवं माप का मुख्य अधीक्षक व मुख्य नैतिक अधिकारी।
  - सभी लोकसेवक, यहाँ तक कि सैन्य कमांडरों से भी उपर का दर्जा।
  - सामान्यतया लोक सेवक एवं मुहतसिब के मध्य तनावपूर्ण संबंध।
  - औरंगजेब ने हिन्दू मंदिरों व पाठशालाओं को तोड़ने का कार्यभार इन्हें ही सौंपा था।

मुगल अधिकारी वर्ग
◦ दरोगा-ए-डाकचौकी - गुप्तचर एवं डाक सेवा प्रमुख।
◦ मीर-ए-बहर - नौसेना प्रमुख।
◦ मीर-ए-तुजुक - धर्मानुष्ठान अधिकारी।
◦ साहिब-तौजीह - सैनिक लेखाधिकारी।
◦ मीर आतिश - शाही तोपखाना प्रमुख, जिसकी सिफारिश पर नगर में कोतवाल की नियुक्ति।
◦ मीर-ए-अर्ज - बादशाह को भेजे जाने वाले आवेदन पत्र का प्रभारी।
◦ दीवान-ए-बयूतात - शाही कारखाना अधीक्षक, जो केन्द्रीय अधिकार मीर-ए-सामान का प्रतिनिधि।
◦ स्वानेह-निगार - सामाचार लेखक।
◦ हरकारा - संदेशवाहक एवं जासूस।
◦ वितिक्ची - अमलगुजार के अधीन भूमि और लगान संबंधी कागजात तैयार करता था।
◦ आमिल - करोड़ी व्यवस्था के तहत लगान वसूली का कार्य।
◦ मुसद्दी - बंदरगाह प्रशासन का अधिकारी।
◦ मुसरिफ - लेखाधिकारी।
◦ मुस्तौफी - लेखा परीक्षक।

* प्रांतीय प्रशासन :- 1580 में - 12
- प्रथमतया अकबर ने 1580 में साम्राज्य को 12 भागों (सूबों) में बाँटा -
  - काबुल ◦ पंजाब ◦ मुल्तान ◦ दिल्ली ◦ आगरा ◦ अवध ◦ इलाहाबाद ◦ बिहार ◦ बंगाल
  - मालवा ◦ गुजरात ◦ अजमेर।

  दक्षिण विजय के बाद तीन और प्रांत जुड़कर 15 हो गए। नये प्रांत - बरार, खानदेश व अहमदनगर। किंतु अबुल फजल ने केवल 12 प्रांतों का ही उल्लेख किया।
- जहाँगीर के समय 16 प्रांत (बंगाल से ही अलग कर उड़ीसा को प्रांत बनाया)। कांगड़ा विजय कर उसे लाहौर सुबे में मिलाया जो पहले से ही एक सूबा था। J. 16
- शाहजहाँ काल में - काबुल से अलग कर कश्मीर, मुल्तान से सिंध तथा अहमदनगर से बीदर को अलग कर दिया गया। इस तरह से प्रांतों की कुल संख्या (16+3) 19 हो गई। S. 19
- औरंगजेब के वक्त बीजापुर व गोलकुंडा दो नये राज्य बने और सूबों की संख्या 21 हो गई। हालाँकि 1648 ई. में ही अंतिम रूप से कंधार मुगलों के हाथ से निकल गया था, इसके बाद भी औरंगजेब इसे अधिकारिक रूप से अपने साम्राज्य का अंग मानता रहा। अतः अधिकारिक स्तर पर 22 प्रांत वास्तविक रूप में सिर्फ 21 प्रांत। A-21

Scanned by CamScanner

प्रत्येक प्रांत में एक गवर्नर (सूबेदार)। शाहजहाँ के समय एक ही शहजादा एक से अधिक प्रांतों के गवर्नर बनते थे। सूबेदार को सिपहसालार व नाजिम भी कहा जाता था।

- प्रांतों को केन्द्र के अधीन व केन्द्र की सत्ता को अक्षुण्ण बनाये रखने का कुछ प्रयास -
  - गवर्नर के अलावा दीवान (प्रांतीय स्तर पर, 1586 में अकबर के द्वारा)।
  - दीवान को गवर्नर से स्वतंत्र अधिकार था।
- प्रांतीय स्तर पर घटनाओं का विस्तृत सूचना केन्द्र को।
- गवर्नर के साथ राज्य का स्थायी संबंध नहीं, पद स्थानांतरणीय।
- गवर्नरों को किसी भी राज्य से संधि तथा किसी को मनसब प्रदान करने का अधिकार नहीं, किंतु अपवाद स्वरूप अकबर के काल में टोडरमल (गुजरात का सूबेदार) को मात्र राजपूतों से संधि करने एवं उन्हें मनसब देने का अधिकार दिया गया।
- दीवान-ए-सूबा - सूबे का वित्त अधिकारी, जो पदक्रम में सूबेदार के नीचे होता था किंतु सूबेदार के मातहत नहीं। वह सीधे तौर पर केन्द्रीय दीवान के प्रति उत्तरदायी था।
- बख्शी - नियुक्ति मुख्य मीर बख्शी की सिफारिश पर शाही दरबार द्वारा। राज्य के बख्शी की सत्ता केन्द्रीय प्रतिनिधि के रूप में (सूबे की समस्त जानकारी केन्द्र को देना होता था)।
- प्रांतीय बख्शी प्रांतीय सेना का वेतनाधिकारी होता था, जबकि केन्द्रीय मीर बख्शी सेना का वेतनाधिकारी नहीं था। केन्द्र में यह काम दीवान-ए-तन करता था।
- प्रांतीय सद्र - केन्द्रीय सद्र के एकाधिकार को समाप्त करने के लिए अकबर द्वारा 1578 में प्रांतीय सद्रों की नियुक्ति।

★ जिला (सरकार) प्रशासन :-

- फौजदार - दीवान के प्रतिनिधि आमिल को भूराजस्व आकलन में सहयोग देने वाला (कारकून)।
- शेरशाह के काल में फौजदार को मुंसिफ-ए-मुंसिफान कहा जाता था, जो परगनों के मालगुजारी कर्मचारियों के कार्यों का निरीक्षण करता था। कालांतर में फौजदार को न्यायिक अधिकार मिला। औरंगजेब के बाद यह पद वंशानुगत हो गया।
- इसके अतिरिक्त कोतवाल, काजी, वितिक्ची, खजानदार आदि जिले स्तर के अधिकारी थे।
- कोतवाल की कचहरी को चबूतरा कहा जाता था (नगरों के विवाद के निपटारे हेतु)।
- औरंगजेब के काल में काजी जजिया और जकात करों की वसूली के लिए भी उत्तरदायी।

★ परगना :- तहसीलदार/ शिकदार (प्रशासन का निम्न स्तरीय संघ)

- शाहजहाँ के शासनकाल में प्रत्येक परगने में मालगुजारी निर्धारण के लिए एक परगना अमीन की नियुक्ति हुई।

★ ग्राम :- (मुकद्दम) यह भू-राजस्व तहसीलदार को देता था (पटवारी गाँव के आय-व्यय का ब्यौरा रखनेवाला) (ग्राम स्तर पर कोई सरकारी अधिकारी नहीं)।

- पटवारी को राजस्व का एक प्रतिशत दस्तूरी के रूप में दिया जाता था।
- परगने के अंतर्गत आने वाले गाँवों को मावदा या दीह तथा इसके अंतर्गत आने वाली छोटी बस्तियों को नागला कहा जाता था।
- चाकला - परगना और सरकार के बीच की एक ईकाई (शाहजहाँ के काल में)।

★ सेना :- राज्य के द्वारा कोई विशाल सेना स्थायी रूप से नहीं रखी जाती थी, परंतु सिद्धांत रूप में साम्राज्य के सभी वली नागरिक शाही सेना के हो सकने वाले सिपाही थे।

- मुगल सेना के चार वर्ग -

◦ मनसबदारों की सेना	◦ अधीनस्थ राजाओं की सेना
◦ अहदी सैनिक	◦ दाखिली सैनिक।

Scanned by CamScanner

- दाखिली पूरक सिपाही थे, जो मनसवदारों के कमान में रखे जाते थे और उनका खर्च राज्य की तरफ से मिलता था, जबकि अहदी प्रतिष्ठा वाले सिपाही थे। वे एक विशेष प्रकार के अश्वारोही थे, जो साधारणतया बादशाह के शरीर के आस-पास रहते थे तथा किसी और के अधीन नहीं थे।
- आधुनिक शब्दों में मुगल सेना के ये भाग थे - 1) घुड़सवार 2) पैदल 3) गोलंदाज 4) जल सेना।
- घुड़सवार सेना - सबसे अधिक महत्वपूर्ण, जिसके अंतर्गत दो तरह के सैनिक - 1) बरगीर (साजो-समान राज्य की ओर से उपलब्ध कराया जाता था) व 2) सीलेदार (केवल युद्ध के समय में नियुक्ति, साजो-समान की स्वयं व्यवस्था)।
- पैदल सेना - इसके अंतर्गत साधारण नगरवासी तथा किसान थे, जो मुगल सेना की सबसे बड़ी शाखा थी। इसके अंतर्गत दो प्रकार के सैनिक - 1) अहसाम सैनिक (तीर-कमान, तलावार, भाला आदि का प्रयोग करने वाले) व 2) सेहवंदी सैनिक (बेरोजगार लोगों में से नियुक्ति)।
- गोलंदार - उस्ताद अली तथा मुस्तफा खाँ द्वारा प्रारंभ की गई मुगल तोपखाना को अकबर ने व्यवस्थित रूप दिया। अकबर ने छोटी-छोटी तोपों का निर्माण करवाया, जिन्हें हाथी व घोड़ों के पीठ पर लादकर असानी से एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जा सकता था।
- जिन्सी भारी तोप होती थी जबकि दस्ती हल्की तोपें। तोपखाने का प्रमुख अधिकारी मीर-ए-आतिश
- जल सेना - आधुनिक अर्थ में कोई प्रबल जल सेना नहीं, किंतु अबुल फजल एक जलसेना विभाग (नवाड़ा) का वर्णन करता है, जिसका प्रमुख अधिकारी मीर-ए-बहर कहलाता था।
- शाइस्ता खाँ और मीर-जुमला की सहायता से औरंगजेब अपनी जल शक्ति को मजबूत करने का प्रयास किया। कहा जाता है कि जंजीरा के सीदियों तथा मोपलाओं के सहयोग से औरंगजेब ने एक शक्तिशाली नौसेना तैयार की थी।
- मुगलकाल में अकबर ने हस्ति सेना के तरफ भी ध्यान दिया और इसके लिए एक अलग विभाग पिलखाना की स्थापना की।

★ कानून एवं न्याय व्यवस्था :-

- मुगल युग में आज की तरह कानून बनाने की विधि अथवा लिखित नियम व्यवस्था कुछ भी नहीं थी, किंतु इसके अपवाद केवल ये थे - जहाँगीर की 12 आज्ञाएँ तथा फतवा-ए-आलमगिरि, जो औरंगजेब की देखरेख में बनी हुयी मुसलमानी कानून की एक संक्षिप्त पुस्तक थी।
- कानून का स्रोत - शरियत, बादशाह की आज्ञाएँ व प्रचलित कानून। विशेषकर बादशाह की आज्ञाओं की ही महत्ता रहती थी, यदि वे पवित्र कानून (कुरान) के विरुद्ध न हो।
- मुगल बादशाह शीघ्र न्याय के पक्ष में। अकबर कहता है कि "यदि मैं किसी अन्यायपूर्ण कार्य के लिए अपराधी होऊँ तो मैं स्वयं को अपने विरुद्ध न्याय करूँगा"।
- बादशाह तक पहुँचने में काफी अड़चने, किंतु कम से कम दो मुगल बादशाह (अकबर व जहाँगीर) ने अपनी प्रजा को सीधे अपने पास आवेदन पत्र भेजने का अधिकार दिया। जहाँगीर ने राजमहल के बाहर न्याय की घंटी लगवाई।
- जहाँगीर ने श्रीकांत नामक एक हिंदू को हिन्दुओं के मुकदमें के लिए जज नियुक्त किया।
- काजी-उल-कुजात साम्राज्य का प्रधान न्यायधीश था, जिसके लिए न्यायी, ईमानदार, पक्षपातरहित होना अपेक्षित।
- फाँसी की सजा देने में बादशाह की स्वीकृति आवश्यक थी।

Scanned by CamScanner

* मनसबदारी व्यवस्था :- यह एक विशिष्ट प्रशासनिक व्यवस्था था, जिसका प्रचलन अकबर द्वारा तथा उसके उत्तराधिकारियों द्वारा किये गए कुछ संशोधनों के साथ यह व्यवस्था मुगल साम्राज्य की सैन्य व सिविल सेवाओं का आधार बनी रही।

- अकबर के शासनकाल के 11वें वर्ष में पहली बार हमें मनसब प्रदान किये जाने का संदर्भ प्राप्त होता है। यह कोई पदवी या पद-संज्ञा नहीं थी, प्रत्युत इससे मुगल प्रशासनिक सेवा अनुक्रम में किसी व्यक्ति या अमीर का बोध होता था।
- मनसबदारी व्यवस्था का प्रारंभ दाग प्रथा अपनाये जाने (1573) से और दो पदों; जात एवं सवार व्यवस्था (1595) से।
- आइन-ए-अकबरी के अनुसार कुल 33 पद जबकि अकबर ने 10 से लेकर 10000 के बीच 66 पद सृजन करने की सोची।
- जात का महत्व सवार से अधिक, इसलिए पहले लिखा जाना सामान्यतया Fixed यदि उसे प्रोन्नति या अवनति न दी गई हो। यह उसके स्तर और वेतन (तलब-खास) का द्योतक।
- सवार, जिसके आधार पर नियमानुसार घोड़े और अन्य दायित्व 'तावितान'।
- मनसबदारी पद किसी व्यक्ति विशेष की महत्ता के सूचक नहीं ; उदाहरण के लिए मानसिंह जिसका पद 7 हजार था, एक सेनानायक मात्र। जबकि टोडरमल (2000 जात) एक ऐसे दीवान जिसकी शक्तियाँ वस्तुतः वकील के समकक्ष थी।
- सम्राट के समीपता का सूचक भी नहीं। अबुल फजल और बीरबल दोनों दो हजार जात।
- जात के आधार पर विभाजन -

◦ 10-500 के नीचे तक - मनसबदार
◦ 500-2500 तक जात वाले- अमीर
◦ 2500 जात से उपर वाले - अमीर-ए-उम्दा

- सवार पद के आधार पर मनसबदारों का विभाजन -

◦ प्रथम श्रेणी - जाति पद के बराबर सवार।
◦ द्वितीय श्रेणी - जाति पद से कुछ कम, किंतु उसके आधे से अधिक सवार।
◦ तृतीय श्रेणी - जाति पद के आधे से भी कम सवार।

- जहाँगीर द्वारा दो-अस्पा ; सिंह-अस्पा व्यवस्था जिसके तहत -
  - बिना सवार रैंक में वृद्धि किए घोड़ों की संख्या में वृद्धि।
  - यह देखते हुए कि दोनों रैंक साथ-साथ मूल सवार पद को विभाजित करके दिए गए हो सकता है। इस कारण हुआ हो कि मनसबदार अपने लिए निर्दिष्ट का अनुपालन न कर रहे हों।

समय के साथ यह संभव नहीं रह गया कि जात पद को बढ़ाया जा सके, क्योंकि ऐसा किए जाने से वेतन के रूप में अतिरिक्त भुगतान करना पड़ता फलस्वरूप राजकोष पर बोझ बढ़ता। कुछ कुलिनों का पदानुक्रम बढ़ाने से अन्य कुलिनों में ईर्ष्या का भाव भी पैदा होता। अतः व्यवहारिक समस्या से निजात पाने के लिए ऐसा किया गया।

- शाहजहाँ ने जागीरों की वास्तविक वसूली के आधार पर महाना जागीर की व्यवस्था शुरू की, जिसके तहत शिशमाहा (जमा की 50 प्रतिशत वसूली) व सिमाहा (25 प्रतिशत वसूली) में बाँटा गया।
- शाहजहाँ के शासनकाल में जिन मनसबदारों को अपनी नियुक्ति के स्थान पर 'जागीर' मिली होती थी, उन्हें अपने 'सवार' मनसब का (1/3) घुड़सवार सैनिक, जिनकों नियुक्ति स्थान से दूर जागीर मिली थी उन्हें (1/4) तथा भारत से बाहर अथवा उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत के मनसबदार को (1/5) घुड़सवार सैनिक रखने होते थे।

Scanned by CamScanner

- औरंगजेब के काल में महत्वपूर्ण अभियान के दौरान बिना जात पद बढ़ाये सवार की संख्या में अतिरिक्त वृद्धि करने का एक नया माध्यम चुना गया, जिसे मुशरूत कहा जाता है।

★ **जागीरदारी व्यवस्था** :- जागीरदार भी मनसवदार थे, जिनका वेतन नकद नहीं मिलता था, किंतु इसके लिए उन्हें कुछ राजस्व क्षेत्र दिए जाते थे, जिन्हें **जागीर** कहते थे। मुगलों के अधीन जागीरदारी प्रथा एक विशिष्ट संस्था के रूप में विकसित हुई, जिसकी नींव अकबर ने डाली।

- उद्देश्य - 1) शाही सेवा में दक्ष एवं अनुशासित व्यक्तियों को लाना 2) सरकार पर भू-राजस्व प्रशासन का बोझ हल्का करना 3) ग्रामीण क्षेत्रों में कानून व्यवस्था लागू करने में मदद।

किंतु 17वीं सदी के अंत तक इस व्यवस्था ने मुगल साम्राज्य के प्रशासनिक और आर्थिक स्थायित्व को अस्थिर करना शुरू किया।

- जागीरदार को नियत भूमि पर स्थायी अधिकार प्राप्त नहीं थे, फिर भी मुगल शासन में कुछ जागीरें वंशानुगत आधार पर प्राप्त थीं - **वतन जागीर** और **अलतमगा जागीर**।
- वतन जागीर अनुवांशिक राजाओं को और जमींदारों को उन्हीं के क्षेत्र में दी जाती थी। जबकि अलतमगा जागीर बादशाह की कृपा से अनुदान स्वरूप दी जाती थी (जहाँगीर के समय प्रारंभ)।
- पद स्थानांतरणीय और मृत्यु पर 'जाब्ती' का नियम। जाब्ती के नियम के चलते जागीरदारों द्वारा कृषकों का ही नहीं अपितु जमींदारों का भी शोषण क्योंकि नियम के चलते वे विलासी हुए। प्रत्युत्तर में, साम्राज्य को जमींदार कृषकों के विद्रोह का सामना करना पड़ा।
- जागीरदारी का मनसवदारी से जोड़ा जाना मुगल सैन्य क्षमता की कमी के रूप में सामने आये।
- जागीरदार को केवल राजस्व निर्धारण एवं संग्रह का ही अधिकार प्रशासनिक अधिकार फौजदार में निहित।
- **पैबाकी** - पुराने जागीरदार से दंड स्वरूप छीनकर नये मनसवदार को आवंटित किए जाने के लिए सुरक्षित रखी गई जागीर भूमि।
- **सावनिह निगार** - जागीरदारों की कार्यवाहियों एवं जागीर की स्थिति का विवरण केन्द्र को भेजता था।
- बढ़ने वाले मनसवदारों एवं व्यवस्था का जागीर से संबंध होने, के चलते प्रभाव खालसा क्षेत्र पर पड़ा। यद्यपि औरंगजेब के पूर्वार्द्ध काल में खालसा क्षेत्र में वृद्धि ही हुयी, जो इस कारण थी कि साम्राज्य का विस्तार भी हुआ था लेकिन उत्तरार्द्ध में खालसा क्षेत्रों में इतनी कमी आ गई थी (मनसवदारों की संख्या बढ़ने के कारण), कि बे-जागीरी समस्या उत्पन्न हुई।

★ **जमींदारी प्रथा** :- जमींदार ऐसे भू-स्वामी, जिन्हें भू-राजस्व वसूल करने का वंशानुगत अधिकार। मुगलकाल में इन्हें देशमुख, पाटिल, नायक कहा जाता था। राजस्व वसूल करने के एवज में इन्हें राजस्व का एक हिस्सा दिया जाता था।

- भूमि पर मालिकाना हक नहीं। नियमित राजस्व चुकाने वाले कृषकों को वह बेदखल नहीं कर सकता था।

मुगल समाज

- अकबर ने कुंडली बनाने की हिन्दू प्रथा अपनाई। बालक को मुस्लिम समाज में स्नान के बाद किसी फकीर का पुराना कपड़ा पहनाया जाता था - अकबर को संत सैय्यद अली शिराजी का कपड़ा पहनाया गया था।
- मुस्लिम समाज में खतना (सुन्नत) समारोह के रूप में मनाया जाता था, किंतु अकबर ने इसकी न्यूनतम आयु सीमा 12 वर्ष कर दिया।
- हिन्दू-मुस्लिम दोनों ही समाज में अल्पायु विवाह की प्रथा थी। अकबर ने इसे लड़का 16, लड़की

Scanned by CamScanner

(14) वर्ष कर दिया। अकबर ने धन लोभ में किसी अधेड़ उम्र की महिला से विवाह पर रोक लगा दिया। यदि महिला और पुरूष की उम्र में (12) वर्ष से ज्यादा का अंतर होने पर उस विवाह को गैरकानूनी घोषित कर दिया।

- अकबर ने दहेज प्रथा का विरोध तो किया किंतु इसे रोकने की कोई चेष्टा नहीं की। यहाँ तक कि मुगल बादशाह भी दहेज लेते थे।
- अकबर सती प्रथा का विरोधी था और विधवा विवाह को कानूनी घोषित कर दिया एवं अनुशंसा की कि इनका विवाह किसी विधुर से कर देना चाहिए।
- डेलावेल/ पेलसर्ट/ ट्रैवर्नियर उल्लेख करते हैं कि विधवा को सती करने से पहले मुगल गवर्नर से इजाजत लेनी पड़ती थी। पेलसर्ट बताता है कि गवर्नर विधवा को सती होने से रोकता था और उन्हें अनुदान भी देता था। ऐसी स्त्रियाँ जिनके छोटे बच्चे होते थे, उन्हें सती होने की इजाजत नहीं दी जाती थी।
- जहाँगीर को जब यह पता चला कि हिमालय की तराई में धर्म परिवर्तन के बाद भी मुसलमान बनने वालों ने सती एवं शिशु हत्या जैसी हिन्दू प्रथा जारी रखी है, तो उन्हें मृत्युदंड देने की घोषणा कर दिया।
- इस्लाम विरूद्ध करार देते हुए शाहजहाँ ने कब्रिस्तान के निकट सती को प्रतिबंधित कर दिया।
- औरंगजेब एकमात्र मुगल शासक था, जिसने अपने राज्य में सती की सामान्य मनाही का कानून पास कर दिया।

नोट :- भारत में सती रोकने का प्रयास करने वाला पहला मुस्लिम शासक मुहम्मद बिन तुगलक था।

- अकबर एक से अधिक स्त्रियों के विवाह को मानव स्वास्थ्य एवं पारिवारिक शांति दोनों के लिए अहितकर मानता था, किंतु यह व्यवस्था सामान्य लोगों पर ही लागू होती थी, अमीर वर्ग पर नहीं। पुनः उलेमा चार विवाह को उचित ठहराते थे।
- मुगल बादशाहों के परिवार में लड़कियों की शादी न करने की परंपरा थी। औरंगजेब पहला मुगल शासक था, जिसने एक फकीर के कहने पर अपनी पुत्रियों मेहरून्निशा एवं जेबुन्निशा की शादियाँ करा दी थी।
- अकबर ने गाँव स्तर पर शादियों के अवसर पर अपने अधिकारियों को आदेश दिया कि परिवार वालों को उपहार में दो नारियल - एक अफसर की तरफ से और दूसरा शहँशाह की तरफ से, दें।
- पर्दा प्रथा मुसलमानों में हिन्दुओं के बनिस्पति ज्यादा। यहाँ तक कि अकबर जैसा शासक घोषित करता है कि कोई नौजवान औरत शहर से बाहर बाजार और सड़क पर बिना घूँघट के घूमें तो उसे वेश्यालय में भेज देना चाहिए।
- बारबोसा ने बंगाल में पर्दा प्रथा का उल्लेख किया है। विजय नगर में पर्दा प्रथा नहीं थी यद्यपि शाही परिवार में सीमित अर्थों में कुछ हद तक पर्दा प्रथा का प्रचलन था।

नोट :- काबुल का गवर्नर अमीर खाँ ने अपनी पत्नी को इसलिए तलाक दे दिया था कि पागल हाथी से बचने के दौरान भागते हुए वह बेपर्दा हो गई थी।

- राजपूत समाज के पिछड़े वर्ग में ही शिशु प्रथा का प्रचलन था, जबकि राजपरिवार में स्त्रियों को कई सुविधाएँ प्राप्त थीं - जैसे वर चुनने का, शिक्षा प्राप्ति, तलवारबाजी, तीरंदाजी, संगीत आदि की शिक्षा प्राप्त करने का। जहाँगीर ने तुजुक में लिखा है कि हिन्दू समाज में कोई भी पवित्र कार्य स्त्री की उपस्थिति के बगैर नहीं होता था, क्योंकि वह पुरूष की अर्धांगनी समझी जाती थी। कई मोर्चों पर पिछड़ने के बाद मुस्लिम महिलाएँ हिन्दू महिलाओं की तुलना में संपत्ति के अधिकार पर ज्यादा सुरक्षित थीं, क्योंकि मुस्लिम महिलाओं को मेहर की राशि प्राप्त होती थी, जबकि हिन्दुओं में सिर्फ स्त्रीधन।

नोट :- चोल स्त्रियों को उत्तराधिकार में हक प्राप्त था।*

- मुगलकाल में राज्य की प्रथम महिला का दर्जा बादशाह की पत्नी को नहीं बल्कि राजमाता या

Scanned by CamScanner

बादशाह की बहन को प्राप्त होता था, लेकिन नूरजहाँ एवं मुमताजमहल इसके अपवाद हैं। 1562 ई. में अकबर ने दास प्रथा पर रोक लगाई, किंतु हिजड़ों का क्रय-विक्रय स्वतंत्रता पूर्वक होता था, जिसे जहाँगीर ने बंद करवा दिया।

★ **मुगलकालीन प्रमुख स्त्रियाँ** :-

- शहजादा बेगम - बाबर की बड़ी बहन, जिसे हुमायूँ के शासनकाल में **पादशाह बेगम** की उपाधि दी गई।
- बीबी मुबारिका - बाबर की पत्नी, जिसने युसूफजायियों एवं बाबर के बीच समझौता कराया।
- हराम बेगम - हुमायूँ के चचेरे भाई सुल्तान मिर्जा की पत्नी जिसे प्रशासनिक योग्यता के लिए **वली नियामत** की उपाधि दी गई।
- गुलबदन बेगम - हुमायूँनामा की रचना की।
- माहम अनगा - 1560-62 तक अकबर एवं उसके शासन पर सर्वाधिक प्रभाव (पेटीकोट शासन)। हुमायूँ के साथ मिलकर मदरसा-ए-बेगम (दिल्ली में) की स्थापना की।
- मरियम मकानी - अकबर की माँ, जिसने अकबर और सलीम के बीच समझौता कराया।
- सलीमा बेगम - अकबर की पत्नी। **मखफी** के नाम से कविताएँ लिखती थी। इसने अजीज कोका के मृत्युदंड़ के आदेश को बदलवा (खुसरो के विद्रोह के मामले में जहाँगीर को समझाकर)।
- बख्तुनिशा बेगम - हराम बेगम की पुत्री। अकबर ने इसे काबुल का गवर्नर नियुक्त किया।
- अस्मत बेगम - नूरजहाँ की माँ। इत्र बनाने की विधि का अविष्कार किया।
- मुमताज महल - शाहजहाँ को पुर्तगालियों के विरूद्ध प्रेरित किया जिसका वर्णन मनूची करता है।
- रौशन आरा - शाहजहाँ की पुत्री, उत्तराधिकार के युद्ध में औरंगजेब का साथ दिया, जिसके कारण इसे शाह बेगम की उपाधि दी गई।
- जहाँ आरा - दारा का पक्ष लिया और साम्राज्य विभाजन की योजना बनाई।
- जेबुन्निशा - औरंगजेब की पुत्री, कुरान जबानी याद, लेखन कला में प्रवीण, गणित व नक्षत्र शास्त्र का अध्ययन किया, अनुवाद विभाग खोला, दिल्ली में बैतुल-उल-उलूम नामक पुस्तकालय की स्थापना की। शहजादा अकबर का साथ दिया।
- जिनतुन्निशा - औरंगजेब की पुत्री, जिसे मराठा कैदियों की देखभाल हेतु नियुक्त किया गया था।
- लाल कुँअर - जहाँदार शाह की प्रिय बेगम, जिसे इम्तियाज महल की उपाधि मिली।
- कुरेशिया बेगम - मुहम्मद शाह की माँ। सैयद बंधुओं के पतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- कोकी ज्यू - मुहम्मद शाह की प्रेमिका, जो अपने ज्योतिष ज्ञान के लिए प्रसिद्ध थी।

★ **मध्यकाल की कुछ अन्य प्रमुख महिलाएँ** :- मीराबाई/ देवलरानी/ रूपमति/ नूरजहाँ।

- रामभद्रंबा - मधुरवाणी की लेखिका एवं आंध्र रामायण की अनुवादिका।
- तिरमलंबा - वरदम्बिका परिणय की लेखिका।
- माईनांगी - मारिची परिणायनम्।
- महाराष्ट्र के स्वामी रामदास की शिष्या - आकाबाई व केनाबाई।

★ **शोक संबंधी रस्में** :- बादशाह के परिजन की मृत्यु की दशा में मातमप्रर्शी के लिए लोग अपनी बाँह पर नीला रूमाल बाँध कर जाते थे। किसी दरबारी की मृत्यु पर 40 दिनों का शोक मनाया

Scanned by CamScanner

जाता था। परिजन की मृत्यु पर सर मुंडवाने की प्रथा कुछ हद तक मुस्लिमों ने भी अपनाया था।
- कोका की माता की मृत्यु पर जहाँगीर ने कुछ दिनों तक अपना वस्त्र नहीं बदला था, क्योंकि जहाँगीर मृत महिला को अपनी माँ के समान समझता था।
- मुमताज महल की मृत्यु पर शाहजहाँ ने रंगीन वस्त्र पहनना बंद कर दिया था। दिल्ली सल्तनत में फिरोजशाह तुगलक/ सिकंदर लोदी और औरंगजेब ने औरतों को संतों के मकबरें पर जाने से रोक लगा दी थी।

* **दरबारी व्यवहार** :- दिल्ली सल्तनत के दौरान दिन में एक बार अमीरों की दरबार में उपस्थिति अनिवार्य थी, जबकि मुगल दरबार में दो बार। दरबार में शहजादों को छोड़कर अन्य कोई भी (राजदूत सहित) बैठ नहीं सकता था।

नोट :- विजयनगर दरबार में राजा से मिलने के लिए लोग नंगे पांव जाते थे और पांव चूमकर राजा का अभिवादन करते थे।

* **त्योहार** :- हिन्दुओं का तुलादान (शासक को कीमती धातुओं से तौलना) की प्रथा हुमायूँ ने प्रारंभ की।
- मीना बाजार की शुरूआत मुगलों में हुमायूँ ने आरंभ की। अकबर के काल में इसे खुसरोज कहा जाता था।
- अकबर ने होली/ दशहरा/ बसंत पंचमी को दरबारी समारोह का अंग मान लिया।
- अबुल फजल ने आइन-ए-अकबरी में रामनवमी तथा कृष्ण जन्माष्टमी के नाम से दो महत्वपूर्ण हिन्दू त्योहारों का उल्लेख किया है।
- अकबर अपनी कलाई पर राखी बँधवाता था। जहाँगीर राखी को निगाहदस्त कहता था और अपने हिंदू अमीरों को आदेश दिया था कि वो उसके कलाई पर राखी बाँधे।
- अकबर दीवाली का त्योहार उत्सव के रूप में मनाता था, जबकि इस कार्य के लिए जहाँगीर जुआ खेलता था। मुगलकाल मे दीवाली के आयोजन के लिए गवर्नर से अनुमति लेनी पड़ती थी।
- अकबर महाशिवरात्रि में जोगियों की संगति करता था।
- औरंगजेब एकमात्र मुगलशासक था, जिसने मुहर्रम पर रोक लगाई।
- सिकंदर लोदी ने ईद-उल-फितर के अवसर पर कुछ कैदियों को जेल से छोड़ने की शुरूआत की।
- ईद-उल-जुहा पर मुहम्मद बिन तुगलक और बाद में जहाँगीर स्वयं बकरे की बलि देता था।
- अकबर ने यह रिवाज चलाया था कि उसका जन्मदिन सूर्यवंश और चंद्रवंश दोनों ही पद्धति पर मनाया जाए।
- औरंगजेब ने अकबर द्वारा प्रारंभ कराये गए सभी हिंदू, पारसी एवं शिया त्योहारों पर रोक लगा दी। आरंभ में इसने नौरोज को वर्ष में एक बार मनाने की राय दी, फिर 1670 में इस पर पूरी पाबंदी लगा दी।
- वर्षा के मौसम के शुरूआत के साथ ही मुगल दरबार में होली की तरह एक पर्व मनाया जाता था, जिसे जहाँगीर आब-ए-पशम और हमीद-ए-लाहौरी इसे ईद-ए-गुलाबी कहता था।
- **हिंदू शिक्षा पद्धति** :- उच्च शिक्षा का स्थल टोला था, जिसे चतुष्पदीय या चौपारी कहा जाता था। शिक्षा का विषय साहित्य, पुराण, वेद, दर्शन, आयुर्विज्ञान, ज्योतिष शास्त्र, खगोल शास्त्र था, जो संस्कृत के माध्यम से दिया जाता था।
- अकबरने खगोल विद्या और गणित का अध्ययन अनिवार्य बना दिया था, इसके साथ ही इसने क्षेत्रीय भाषा - बंगला, उड़िया, हिंदी, पाली आदि भाषाओं को भी प्रोत्साहित किया।
- पढाई का तरीका मौखिक था और शिक्षक निःशुल्क शिक्षा देते थे। सामान्यतः हिंदू परिवार में बालक पाँच वर्ष की अवस्था में अपनी पढ़ाई आरंभ करता था।

Scanned by CamScanner

- सलाका परीक्षा - अध्ययन के बाद की परीक्षा।
- ब्रह्मचर्य के दौरान शिक्षा समाप्त होने पर समावर्तन समारोह के बाद उपाध्याय, पीयूस वर्ष आदि उपाधि दी जाती थी।
- सरहिन्द में आयुर्विज्ञान की शिक्षा दी जाती थी।
- दारा शिकोह ने **सिर्र-ए-अकबर** में बनारस को एक महत्वपूर्ण शिक्षा केन्द्र बताया है।
- अकबर ने रघुनंदन दास राय को दिग्विजय के लिए भेजा था और प्रसन्न होकर उसे मिथिला नगर उपहार में दे दिया। किंतु रघुनंदन दास राय ने मिथिला को अपने गुरू महेश ठाकुर को दे दिया।
- मिथिला तर्कशास्त्र के अध्ययन का महत्वपूर्ण केन्द्र, किंतु बाद में इसका स्थान नदिया (बंगाल) ने ले लिया।
- केरल के राजा ने कुलारी में सैनिक विद्यालय की स्थापना की।

- मुस्लिम शिक्षा पद्धति :- मुस्लिम समाज में प्रारंभिक शिक्षा मकतब में दी जाती थी, जो सामान्यतः मस्जिदों से संलग्न होता था। मदरसा में उच्च शिक्षा दी जाती थी।
- मदरसा या कॉलेज - इल्तुतमिश ने मुहम्मद गोरी के नाम पर **मदरसा-ए-मुअज्जमी** एवं नसिरूद्दीन के नाम पर **मदरसा-ए-नासिरी** की स्थापना कराई। फिरोजशाह तुगलक ने **मदरसा-ए-फिरोजशाही** के अलावा हौज-ए-अलाई और हौज-ए-खास के पास भी मदरसा बनवाया। सिकंदर लोदी ने आगरा, मथुरा और मारवाड़ में मदरसा बनवाया। महमूद गवाँ का बीदर का मदरसा प्रसिद्ध था। शेरशाह ने नॉरनौल, अबुल फजल ने फतेहपुर सीकरी और शाहजहाँ ने दारूल बका नाम से दिल्ली में मदरसा बनवाया।
- पढ़ाई समाप्त होने के बाद शिक्षक दस्तरबंदी (सिर पर पगड़ी बाँधना) के माध्यम से विद्यार्थी को गौरव प्रदान करते थे। मौलाना अलाउद्दीन उसूली ने इसी भाँति अपने शिष्य निजामुद्दीन औलिया को सम्मानित किया था।
- कुछ महत्वपूर्ण शिक्षा केन्द्र - अकबर ने आगरा में एक मदरसा खुलवाया, जहाँ पढ़ने के लिए उसने सिराज से विद्वानों को आमंत्रित किया था।
- दिल्ली में अकबर की धाय माँ माहमअनगा ने खैरूल मंजिल एवं हुमायूँ का दिल्ली का मदरसा ख्याति प्राप्त था।
- इब्नबतूता ने भारत के दक्षिण-पश्चिम भाग में हिनावर में लड़कियों के लिए अलग से मकतब होने का उल्लेख किया है।
- एक समकालीन रचना **महिला मृदवाणी** में 35 लेखिकाओं का संकलन है।
- सुलेखन को उच्च कला माना था और इसमें निपुण व्यक्ति को अच्छा वेतन दिया जाता था। आठ प्रकार का सुलेखन प्रचलित था, जिसमें नदख और नस्तलीफ प्रमुख थे। बाबर ने खत-ए-बाबरी नामक एक सुलेखन शैली की शुरूआत की। छापाखाना के अभाव में पुस्तकें काफी महंगी होती थीं।
- **पुस्तकालय** - मुहम्मद बिन तुगलक का अपना एक पुस्तकालय था। हुमायूँ का पुस्तकालय पुराना किला में था, जिसे **शेरमंडल** कहा जाता था। अकबर ने आगरा के किला में पुस्तकालय बनवाया, जिसमें 24000 पुस्तकें थीं।
- अकबर के शाही पुस्तकालय को जहाँगीर, शाहजहाँ एवं औरंगजेब ने विस्तार दिया। बीजापुर के पतन के बाद आदिलशाही पुस्तकालय की दुर्लभ पुस्तकें औरंगजेब दिल्ली लाया था।
- निजी पुस्तकालय रखने का भी प्रचलन था। गुलबदन बेगम, सलीमा बेगम, नूरजहाँ एवं जेबुन्निशा के पास अपना निजी पुस्तकालय था। इसी तरह अब्दुर्रहीम खानखाना एवं फैजी का भी अपना पुस्तकालय था। जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह के पुस्तकालय में खगोल की मानक पुस्तकें संग्रहित थी, जिनमें से कई यूरोप से मंगाई गई थीं।

Scanned by CamScanner

स्थापत्य :-

- बाबर द्वारा बनवाया गया तीन मस्जिद - काबुली - पानीपत, जामी - संभल, बाबरी - आगरा।

नोट :- अयोध्या के बाबरी मस्जिद का निर्माण बाबर के एक सिपहसलार **मीर बाकी** ने कराया था।

- बाबर ने ज्यामिति विधि पर आधारित आगरा में एक उद्यान लगवाया, जिसे **नूरअफगान** नाम दिया गया।
- बाबर ग्वालियर के स्थापत्य कला से काफी प्रभावित था।
- शुरहत-ए-आम (निर्माण विभाग) का गठन, जो शिक्षा संस्थाओं के निर्माण से संबंधित था।

★ **हुमायूँ** - आगरा एवं फतेहाबाद में मस्जिद (ईरानी शैली)। **दीनपनाह नगर** की स्थापना।

★ **शेरशाह** - पुराना किला जिसे **किला-ए-कुहना** कहा जाता है। कन्नौज नगर को बर्बाद कर शेरशूर नगर बसाया।

- हुमायूँ ने शेरशाह के पुराना किला में पुस्तकालय का निर्माण कराया।
- मकबरा :- सासाराम - अष्टकोणीय आधार, जल के बीच में निर्माण।
  - स्थापत्यकार - अलीवल खाँ।
  - ताजमहल से भी सुंदर - कनिंघम।
  - बाहर से मुस्लिम व अंदर से हिंदू - कानूनगो।

★ **अकबर** :- लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग। शहतीर का प्रथम प्रयोग। लोदी शैली के गुंबद का प्रयोग। पच्चीकारी, नक्काशी, चमकीले रंगों का प्रयोग।

- भारतीय एवं ईरानी शैली तथा त्रिविमीय एवं अरकुएट शैली का समन्वय।
- सफेद संगमरमर का उपयोग, बौद्ध शैली, पिरामिड शैली का प्रयोग।
- अकबर काल का प्रथम निर्माण **हुमायूँ का मकबरा**, जो बेगा बेगम (हाजी बेगम) के निरीक्षण में बना। स्थापत्यकार - **मिर्जा गयास बेग**। इसका निर्माण चारबाग शैली में (इस प्रकार का पहला उदाहरण)। अष्टकोणीय आकार एवं भारतीय एवं ईरानी शैली का प्रभाव तथा संगमरमर का प्रयोग होने के कारण इसे ताजमहल का पूर्वगामी माना जाता है। दोहरी गुंबद वाला भारत का पहला मकबरा है। पहली बार चहारदीवारी का प्रयोग।

नोट :- प्रथम बागयुक्त मकबरा सिकंदर लोदी का।

- **आगरा का लाल किला** - कारीगर कासिम खाँ। इस पर गुजराती एवं बंगाली शैली का प्रभाव। इस किला का पूर्वी दरवाजा - अमरसिंह द्वार। पश्चिमी द्वार - दिल्ली द्वार। इस किले की साधारण रूपरेखा मानसिंह के ग्वालियर किले से मिलती-जुलती है।
- **जहाँगीरी महल** - शाहजहाँ ने इसके अनेक भवन तुड़वाकर इसपर अनेक नवीन भवनों का निर्माण करवाया। जैसे - आगरा का मोती मस्जिद, संगमरमर का दीवान-ए-आम, मुसम्मन बुर्ज आदि।
- अबुल फजल के अनुसार आगरा के किले में 500 इमारतें थी।
- 40 स्तंभों वाला राजमहल इलाहाबाद में।
- **फतेहपुर सिकरी** - इसका निर्माण आठ वर्षों में हुआ था। इसके महत्वपूर्ण भवन -
  - बीरबल भवन - दोनों ओर से अलंकृत।
  - जोधाबाई का महल (गुजराती शैली) - अलंकरणों की प्रेरणा दक्षिण के मंदिरों की वास्तुकला से। सिकरी का सबसे बड़ा महल।
  - जामी मस्जिद - संगमरमर का बना। इसे फतेहपुर का गौरव कहा जाता है। फर्ग्यूसन कहता है कि यह पत्थर में एक रूमानी कथा है।
  - दीवान-ए-आम (हिंदू शैली) व दीवान-ए-खास
  - तुर्की सुल्ताना का महल - स्थापत्य कला का मोती (पर्सी ब्राउन)।

Scanned by CamScanner

- बुलंद दरवाजा - संगमरमर तथा लाल प्रस्तर का प्रयोग। गुजरात विजय के उपलक्ष्य में निर्मित यह इमारत पश्चिमी भाग में अवस्थित है।
- शेख सलीम चिश्ती का मकबरा - संगमरमर निर्मित। शेख सलीम चिश्ती के प्रांगण में स्थित इस्लाम शाह के मकबरे में पहली बार वर्गाकार मेहराब का प्रयोग किया गया है।
- पंचमहल - पिरामिडनुमा भवन, जिसपर बौद्ध विहार शैली की छाप।

फतेहपुर सिकरी को फर्ग्युसन अकबर के मस्तिष्क का प्रतिबिंब माना है।
अबुल फजल ने अकबर के स्थापत्य कला में अभिरूची की प्रशंसा करते हुए कहा है कि - 'इसने आलीशान इमारतों की योजना बनाई तथा अपने मस्तिष्क एवं हृदय की रचना को पत्थर एवं मिट्टी की पोशाक पहनाई'।

जहाँगीर

- इसके काल में अकबर का मकबरा सिकंदरा (इसमें ईश्वर के 99 नामों का उल्लेख है) में बना।
- इसे अकबर खुद बनवाना आरंभ किया था। एकमात्र गुंबद - विहीन मकबरा। बौद्ध विहार या महाबलिपुरम के रथ के सदृश को हॉवेल ने महान शासक के लिए उपयुक्त मकबरा कहा है।*
- इसमें जोड़ी गई जहाँगीर द्वारा संगमरमर की मीनारें मुगल स्थापत्य में सजावट के स्थान पर पहली बार प्रयुक्त।
- अब्दुर्रहीम खानखाना का मकबरा दिल्ली में।
- एत्मादुद्दौला का मकबरा - इसमें पहली दफा पित्रा-दुरा* उपयोग में लाया गया। अधिकांशतः संगमरमर का प्रयोग। ईरानी शैली में निर्मित।

शाहजहाँ (स्थापत्य का स्वर्णकाल)

- संगमरमर का प्रयोग।
- शहादरा में जहाँगीर का मकबरा।
- मच्छी महल, नगीना मस्जिद, शीश महल, मोती मस्जिद - आगरा में।
- लाल किला, जामा मस्जिद, नहर-ए-बहिस्तान - दिल्ली में।
- 1639 में शाहजहाँवाद का निर्माण।
- लाल किला (दिल्ली) - 1648 में पूर्ण, लाल बलुआ पत्थर से निर्मित। 1 करोड़ की लागत से बनने वाले इस किले का शिल्पकार - हमीद अहमद। किले का पश्चिमी द्वार - लाहौरी दरवाजा तथा दक्षिणी द्वार - दिल्ली दरवाजा है।
- लाल किले के दीवान-ए-खास पर खुदा है* - 'यदि जमीन पर कहीं स्वर्ग है, तो यही है' (अमीर खुसरो)। साथ ही इसके अंदर की छत चांदी की बनी है तथा उसपर सोने, संगमरमर वह बहुमूल्य पत्थर की सजावट की गई है।
- लाल किले के दीवान-ए-आम में तख्ते-ताउस रखा जाता था। इसके कोष्ठ में बने चित्रों का विषय फ्लोरेंस नाइटिंगल से संबंधित है।

★ ताजमहल - स्थापत्य का सबसे अच्छा उदाहरण है।

- मुख्य डिजाइन - उस्ताद अहमद लाहौरी को नादिर-उल-उस्र की उपाधि और इसका प्रधान मिस्त्री या निर्माता उस्ताद ईशा था।
- इसे हॉवेल ने, 'भारतीय नारीत्व की साकार प्रतिमा' एवं 'यह एक ऐसा महान आदर्श विचार है, जो स्थापत्य कला से नहीं बल्कि मूर्तिकला से संबंधित है', बताया है।
- 'ताजमहल संगमरमर के रूप में वह स्वप्न है, जिसकी योजना ईश्वर ने तैयार की तथा निर्माण स्वर्णकारों ने किया' - (लेनपूल)।

Scanned by CamScanner

- यह मकबरा हुमायूँ के मकबरे से प्रेरित।
- शाहजहाँ ने अजमेर के ही मुईनुद्दीन चिश्ती के दरगाह को संगमरमर में ढलवाया।
- निजामुद्दीन औलिया के दरगाह का पुनर्निर्माण करवाया।
- अजमेर के अन्ना सागर झील में स्नान घाट एवं फिरदौस का निर्माण।
- शाहजहाँ के काल में आगरा के जामी मस्जिद, जिसे मस्जिद-ए-जहाँनामा कहा जाता था, का निर्माण शाहजहाँ की पुत्री जहाँआरा ने करवायी।

औरंगजेब

- मोती मस्जिद (पूर्ण संगमरमर का) - दिल्ली के लाल किले के अंदर। लाहौर की बादशाही मस्जिद। औरंगाबाद का रविया उदर्रानी या बीबी का मकबरा।
- बीबी के मकबरा को ताजमहल की फूहड़ नकल और दक्षिण का ताजमहल कहा जाता है।
- औरंगजेब की बेटी मेहरून्निशा ने कश्मीर में चहारबुज बाग लगवाया था।

नोट :- ० बाबर आगरा में आरामबाग ० जहाँगीर ने कश्मीर में शालीमार बाग ० दिल्ली में शालीमार बाग शाहजहाँ द्वारा ० निशांत बाग जहाँगीर काल में आसफ खाँ द्वारा ० तख्त-ए-ताउस (मयूर सिंहासन) शाहजहाँ द्वारा ० शाहजहाँ - कश्मीर में निशांत बाग बनवाया ० औरंगजेब - हरियाणा में पिंजौर बाग का निर्माण करवाया।

-: चित्रकला :-

★ बाबर एक कला प्रेमी, जैसा कि उसकी तुर्की लिपि में आत्मकथा के चित्रण अंक एवं **पूर्व के राफेल** कहे जानेवाले विहजाद के प्रति उसकी आस्था से पता चलता है (बाबरनामा में एकमात्र चित्रकार विहजात का उल्लेख)।

★ **हुमायूँ** ईरान प्रवास के दौरान दमिष्क के **सैय्यद अली** और शिराज के **अब्दुस्समद**, जिनकों चावल के दाने पर चौगान दृश्य अंकित करने के लिए उसने **सीरीन कलम** की उपाधि दी, के संपर्क में आया। इन दोनों को हुमायूँ ने **दास्तान-ए-अमीरहम्जा** को चित्रकारी का काम सौंपा। इसके साथ ही मीर सैय्यद अली को **नादिर-उल-उस्र** की उपाधि भी दी।

- दास्तान-ए-अमीरहम्जा मुगल चित्रकला शैली में चित्रित सबसे प्रारंभिक और महत्वपूर्ण चित्र संग्रह है। इस पांडुलिपि में 1200 चित्रों का संग्रह है, जो मीर सैय्यद अली के पर्यवेक्षण में पूर्ण हुआ।
- अब्दुस्समद की कुछ कृतियाँ **गुलशन चित्रावली** (जहाँगीर द्वारा तैयार करवायी गई) में संकलित है।

★ **अकबर** - मुगल चित्रकारी को एक सुव्यवस्थित रूप दिया और हुमायूँ कालीन उपरोक्त दोनों चित्रकारों के सहयोग से मुगल कारखानों को स्थापित किया, जिसमें 100 कलाकार तथा इसमें से 17 महत्वपूर्ण में 13 हिंदू थे।

- इसके काल में चित्रकला में ईरानी शैली का प्रभाव व इसका भारतीय शैली से मिश्रण। चौड़ा ब्रश की जगह गोल ब्रश का उपयोग। नीला + लाल रंग का प्रयोग। यूरोपीय शैली का भी प्रभाव।
- अकबर के समय पहली बार भित्ति चित्रकारी की शुरूआत।
- प्रमुख चित्रकार - दशवंत (अग्रणी चित्रकार), दसावन, मिस्किन, केशवलाल, हेमकरण, माधो, महेश, हरिवंश, राम। विदेशी कलाकार - अब्दुस्समद, फारूख बेग, खुसरो, जमशेद।
- अब्दुस्समद - अकबर का शिक्षक। इसके नेतृत्व में चित्रकारी का एक नया विभाग खोला। **सीरीन कलम** की उपाधि तथा मुल्तान का दीवान नियुक्त किया गया। दसवंत की मृत्यु के पश्चात टकसाल का प्रभारी नियुक्त।

Scanned by CamScanner

* - दसवंत - कुम्हार का बेटा, उच्च कोटि का चित्रकार, इसके चित्र रज्मनामा के अतिरिक्त कही नहीं मिलता। बाद में मानसिक रूप से विक्षिप्त होकर आत्महत्या कर ली।

- अकबर के समय में सर्वप्रथम **आशिका पांडुलिपि** के लघुचित्र 1568 ई० में बनाये गए।
- अकबर के समय अन्य चित्रित ग्रंथ - रज्मनामा, रामायण, बाकियात-ए-बाबरी, अकबरनामा, अनवर-ए-सुहेली, तारीख-ए-रसीदी, खम्सा निजामी आदि।
- **मुहम्मद शरीफ** (अब्दुस्समद का पुत्र) के पर्यवेक्षण में रज्मनामा का चित्रण किया गया। फारूख बेग के के अतिरिक्त सभी चित्रकारों में रज्मनामा तैयार करने में अपना सहयोग दिया।
* बसावन (सर्वोत्कृष्ट चित्रकार) छवि चित्रकारी तथा भू-दृश्यों के चित्रण में निपुण। "एक कृशकाय घोड़े के साथ निर्जन स्थान में भटकते मजनू का चित्र" इसकी सर्वोत्कृष्ट कृति है।
- यूरोपीय प्रभाव वाले चित्रकारों में मिस्किन सर्वश्रेष्ठ।

* **जहाँगीर** - इसने शहजादा होने के काल में ही हेरात के आगा रिजा खाँ के निर्देशन में आगरा में एक चित्रशाला का निर्माण कराया। इसके काल में अकबर काल के समान पांडुलिपि चित्रण के प्रति उत्साह नहीं रहा व छवि चित्रण की प्रधानता हो गई व इस पर रूपवाद व यथार्थवाद का स्पष्ट प्रभाव पड़ा। सिर्फ तुजुक-ए-जहाँगीरी का चित्रण।
- अकबर के उलट चौड़े ब्रश का उपयोग।
- वनस्पतियों का चित्रण विशेष तौर पर।
- तस्वीरों के चारो तरफ हाशिये को अलंकृत किया जाता था। सम्राट की तस्वीर के साथ अनिवार्यतः प्रभामंडल व प्रकाश का प्रभाव (बौद्ध कला का प्रभाव)।
- इटालवी संतों की ही भांति राजा को महामानवीय रूप ही दिया जाता था।
- **प्रमुख चित्रकार - हिन्दू** - 1) **विसनदास** - इसे शाह अब्बास व उसके संबंधियों का चित्र बनाने ईरान भेजा था। कालांतर में शाह अब्बास से गला मिलते हुए जहाँगीर की तस्वीर। यद्यपि जहाँगीर शाह से कभी नहीं मिला।

2) **मनोहर** - बसावन का पुत्र , तुजुक-ए-जहाँगीरी में इसका नाम नहीं मिलता।

3) **दौलत** - फारूख बेग का शिष्य, अपने साथी चित्रकारों का एक सामूहिक चित्र बनाया।

° **फारसी चित्रकार** - 1) अबुल हसन - नादिर-उल-जमा की उपाधि मिली, जहाँगीर के गद्दी पर आसीन होने का एक चित्र तैयार किया, जिसे बाद में तुजुक-ए-जहाँगीरी के मुख्य पृष्ठ पर लगा दिया गया। ड्यूटर के संत जॉन पॉल की तस्वीर बनाई। इसकी सर्वाधिक प्रमुख विशेषता - रंग योजना।

अबुलहसन नादिर-उल-जमा।

2) **फारूख बेग** - बीजापुर के सुल्तान आदिल शाह का चित्र बनाया, साथ ही प्राचीन कवियों व दरवेशों का भी चित्र बनाया।

3) **मंसूर** - प्राकृतिक दृश्यों तथा पशु-पक्षियों के चित्रण में माहिर। नादिर-उल-उस्र की उपाधि मिली। महत्वपूर्ण कृतियों में - साइबेरिया का एक सारस व बंगाल का एक अनोखा पुष्प।

मंसूर नादिर-उल-उस्र।

- जहाँगीर स्वयं एक निपुण चित्रकार था, जो दावा करता है कि वह विभिन्न चित्रकारों के सहयोग से बने हुए चित्र में पहचान सकता है कि किसने कौन सा अंग बनाया है।
- यूरोपीय शैली का तैलचित्र को अपनाने का प्रमाण नहीं। टॉमस रो से एक चित्र मंगवाया गया था, जिसका मुकम्मल नकल जहाँगीर के चित्रकारों ने उतार कर टॉमस रो को भी भ्रमित कर दिया था।

* **शाहजहाँ** - शाहजहाँ के काल में एक, परिष्कृत रूप में जहाँगीर की परंपरा चलती रही जिसमें सुनहरे रंगों का व्यापक प्रयोग हुआ और चित्रों की चाहरदीवारी, जो जहाँगीर के समय प्रारंभ हुई थी, में मोर एवं फूलों का अंकन प्रारंभ हुआ। उसके समय शाही स्त्रियों के भी चित्र बने और शाहजहाँनामा चित्रित हुई, जो 1857 में नष्ट हो गई।

Scanned by CamScanner

- भव्यता, सौन्दर्य, प्रभामंडल आदि स्तर पर विकास, किंतु मौलिकता का आभाव क्योंकि स्थापत्य पर ज्यादा बल।
- इसके काल में मुहम्मद नादिर समरकंदी भारत आया था, जो विदेश से आनेवाला अंतिम चित्रकार था।
- दारा शिकोह का अपना एक एलबम था।
- शाहजहाँ को एक चित्र में सूफी नृत्य करते हुए दिखाया गया था।

★ **औरंगजेब** - एक तरफ जहाँ अकबर मानता है कि चित्रकार के पास पहचाने की एक दिव्य दृष्टि होती है वहीं औरंगजेब इन्हें इस्लाम विरोधी मानता है। इसीलिए इसके काल में चित्र केवल चार प्राप्त हुए हैं और चित्रकार स्थानीय क्षेत्रों में चले गए, फलस्वरूप मुगल प्रभाव में **राजपूत शैली** का पनुर्उदय हुआ -

- राजस्थानी शैली - कलरव करते, चहचहाते पंक्षी व क्रीड़ा करते पशु इस शैली का विषय।
  - इसका प्राचीनतम घराना - नियारदीन (मेवाड़ में)।
- जोधपुर / नागौर शैली में मनुष्य की आंख मछली की आंख के समान बनाई जाती थी।
- किशनगढ़ी शैली - गीतात्मक शैली। प्रतिपादक - महाराजा सावंत सिंह।
- कांगड़ा शैली की ही एक शैली गहड़वाल शैली, जो कालांतर में सिक्ख कला में विकसित।

नोट :- औरंगजेब की आज्ञा से अकबर के मकबरे वाले चित्रों को चूने से पोत दिया गया था - मनूची।

-: संगीत :-

- प्रथमतः अमीर खुसरो ने भारतीय रागों का वर्गीकरण - 12 भागों में। इन्होंने कुछ नए रागों का भी प्रचलन कराया - कव्वाली, ख्याल, तराना का विकास अमीर खुसरो ने किया।

नोट :- सितार - इसका आविष्कार कुछ लोगों के अनुसार 18वीं सदी के किसी खुसरो ने किया।

- तुर्कों ने रबाब व सारंगी हिन्दुस्तान लाया।
- दक्षिण का एक संगीतज्ञ, गोपाल नायक अलाउद्दीन खिल्जी के दरबार में था।
- राणा कुंभा की पुस्तक - संगीत राग।
- मान कौतुहल - ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर, विरचित। इन्हीं के दरबारी पुंडरिक बिट्ठल विरचित - रागमाला।
- लज्जत-ए-सिंकदरी - भारतीय संगीत पर प्रथम फारसी पुस्तक।
- किताब-ए-नौरस - इब्राहिम आदिल शाह।
- नगमात-ए-आसफी - मुहम्मद रिजा खाँ (पटना)। उत्तरी भारत में आधुनिक संगीत के अग्रदूत।
- संगीत सार - माधव विद्यारण्य।
- संगीत शिरोमणि - इब्राहिम शाह शर्की को समर्पित।
- तुहफात-उल-हिंद - जहाँदार शाह के काल की रचना।
- आइन-ए-अकबरी - 36 गायकों का उल्लेख। जिनमें तानसेन को कंठाभरण विलासवाणी कहा गया है। बाजबहादुर भी संगीतज्ञ के रूप में उल्लिखित। तानसेन पहले रीवा के रामचंद्र के दरबार में थे। इनके संगीत गुरू हरिदास को मिर्जा की उपाधि दी गई थी।
- जहाँगीर ने शौकी खाँ को आनंद खाँ की उपाधि दी।
- संगीत परिजात की रचना अहोबल ने की।
- शाहजहाँ स्वयं भी एक अच्छा गायक था। इसके दरबार में तानसेन दामाद लाल खाँ एवं पुत्र विलास खाँ रहते थे। इसके अलावा सुखसेन। शाहजहाँ ने लाल खाँ को गुणसमुद्र की उपाधि दी थी।
- मान कौतूहल का फारसी अनुवाद राग दर्पण नाम से करते हुए फकीरूल्ला ने इसे औरंगजेब को समर्पित किया।

Scanned by CamScanner

फैजी, किगानी, उर्फी

- मानसिंह तोमर द्वारा ध्रुपद की शुरूआत।
- औरंगजेब के दरबार में सिर्फ नगाड़ा बजाने की अनुमति थी।
- काव्य की सबसे प्रधान धारा गजल थी।
- कुछ प्रधान कवि - जहूरी, जो अहमदनगर के बुहरान निजामशाह के राजकवि थे। इनकी रचना साकीनामा।
- 16वीं सदी के तीन महाकवि - 1) फैजी 2) किगानी 3) उर्फी।
- मिर्जा मुहम्मद अली साहब 17वीं सदी के सबसे महान कवि। शाहजहाँ ने इन्हें मुस्तैद खाँ की उपाधि दी।
- अकबर के राजकवि मुल्ला गजाली मशदी।
- तालिब अमूली - जहाँगीर का राजकवि।
- अबु तामिल कलीम - शाहजहाँ का राजकवि।
- कादिसी - शाहजहाँ के काल का कवि।
- जहाँदार शाह के काल में संगीत पर तुहफुत-उल-हिंद की रचना।
- मुहम्मद शाह रंगीला निपुण गायक एवं नृत्यकार था।

मुगलकालीन देशी साहित्य

० चंदायन - मुल्ला दाउद	० मृगावती - कुतुवन
० पृथ्वीराज विजय - जयनक	० हम्मीर रासो - सारंगधर
० अल्हाखण्ड - जगनक	० मधुमालती - मंझन
० चित्रावली - उस्मान	० इन्द्रावती - नूर मुहम्मद
० सुखमणी - गुरू अर्जुनदेव	० हीर राँझा - वारिश शाह
० उड़िया महाभारत - सरलादास	० असमी रामायण - माधव कुण्डली
० हर गौर संवाद - हेम सरस्वती	० तमिल महाभारत - बिल्ली मुत्तरार
० प्रेम व्रतिका - रसखान	० कविप्रिया - केशवदास
० कवित्त रत्नाकार - सेनापति	० चैतन्य चरितामृत - कृष्णदास कविराज
० वंश भास्कर - सूरजमल	० मिमांशा खंडन - जगन्नाथ (पंडित राज की उपाधि)
० वाणासूर बाघा - जैनुल आबिदीन को प्रथम धर्मनिरपेक्ष शासक बताने वाली कश्मीरी कविता।	
० शिवासली/शिवराजभूषण - भूषण - साहित्य के कवि।	

- अकबर के दरबारी कवि - गजाली, फैजी, हुसैन बाजीरी।
- अकबर ने मुहम्मद हुसैन को जरी-ए-कलम की उपाधि दी।
- अकबर ने संस्कृत में अल्लपनिषद् नामक एक छोटा उपनिषद् लिखवाया।
- बीरबल को कविप्रिय की उपाधि। मानसिंह भी कवि।
- नरहरि को अकबर ने महापात्र की संज्ञा दी।
- रामचरित मानस भारत के करोड़ों लोगों का बाइबिल - प्रियसेन ने कहा।
- महेश ठाकुर अकबरकालीन इतिहास संस्कृत।
- जगन्ननाथ पंडित (गंगा लहरी) - शाहजहाँ के दरबारी कवि महाकवि की उपाधि।

Scanned by CamScanner